thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 11 जनवरी 2015 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 11 जनवरी 2015 से 17 जनवरी 2015

मा.कृ. 06 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 139, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवक समाज बिहार ने आयोजित किया

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन एवं 151 कुण्डीय यज्ञ महोत्सव

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, बिहार के सौजन्य से महान आर्य समाजी एवम् तपोनिष्ट महात्मा हंसराज जी के 150 वें जन्म वर्ष के एपलक्ष्य में 'प्रांतीय आर्य महासम्मेलन एवम् 151 कुंडीय यज्ञ महोत्सव–2014' का आयोजन दिनांक 22 तथा 23 नवम्बर, 2014 को डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, कैंट एरिया, गया के विशाल प्रांगण में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सपत्नीक आर्यरत्न माननीय श्री पूनम सूरी जी, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली उपस्थित थे। इनके साथ विशिष्ट सम्मानित अतिथि श्री सतपाल जी आर्य, नई दिल्ली श्रीमती निशा पेशिन, निदेशक, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल्स, नई दिल्ली, श्रीमती प्रेमलता गर्ग, प्राचार्या, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, श्रेष्ठ विहार नई दिल्ली, श्रीमती ऋतु गुप्ता, नई दिल्ली, आदि उपस्थित थे। डी.ए.वी., पटना प्रक्षेत्र के सहायक क्षेत्रीय निदेशक इंद्रजीत राय, रामानुज प्रसाद, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल मुजफ्फरपुर प्रक्षेत्र के एस.के. झा, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भागलपुर प्रक्षेत्र के के.के. सिन्हा, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, संथाल परगना प्रक्षेत्र के बी.पी. यादव, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, धनबाद प्रक्षेत्र के के.पी. श्रीवास्तव, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सोनभद्र प्रक्षेत्र के एल.आर. सैनी तथा समूचे बिहार और झारखंड स्थित डी.ए.वी. पब्लिक स्कूलों के प्राचार्यगण पधारे थे। इन सभी आगत अतिथियों का स्वागत डॉ. यू.एस.प्रसाद, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, बिहार ने किया।

यज्ञ–हवन का कार्य शुरू किया गया, जिसमें ब्रह्मा के रूप में आचार्या डॉ. प्रीति विमर्शिनी, उप प्राख्र्य, पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी तथा उनकी छः ब्रह्मचारिणी शिष्याओं द्वारा वेदमंत्र पाठ एवम् मंत्रोच्चारण प्रस्तुत किया गया। विद्यालय के विशाल प्रांगण में 151 हवन कुंडों इसे देखकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे वैदिक संस्कृति और ऋषि–परम्परा पुनर्जीवित हो उठी है। 151 कुंडो पर बिहार प्रक्षेत्र के भिन्न–भिन्न जिलों से आए आर्य समाजी, प्राचार्यगण तथा छात्र–छात्राएँ बैठकर यज्ञ–हवन का पवित्र और श्रेष्ठ कार्य संपादित कर रहे थे। यज्ञ की महिमा को उपस्थित करते हुए आचार्या प्रीति विमर्शिनी ने कहा कि जिस प्रकार समिधा और सामग्री अग्नि को उद्‌बुद्ध करने हेतु तिल–तिल कर जलती है, उसी प्रकार देश और राष्ट्र को उद्‌बुद्ध करने के लिए हमें परिश्रम और पुरुषार्थ की अग्नि में तिल–तिल कर जलना पड़ता है।

आयोजन के दूसरे दिन प्रतः काल 9:00 बजे विद्यालय के विशाल प्रांगण में 151 हवन कुड सुशोभित हो रहे थे, मुख्य अतिथि आर्यरत्न माननीय पूनम सूरी जी (सपत्नीक) के साथ बिहार प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान गंगा प्रसाद आर्य, विभिन्न प्रक्षेत्रों के क्षेत्रीय निदेशक एवम् प्राचार्यगण, आर्य समाजी, श्रद्धालुगण, शिक्षकगण और नगर के गणमान्य लोग हवनकुंडो में समिधा डालते हुए यज्ञाग्नि को प्रज्ज्वलित कर रहे थे। पूरा का पूरा वातावरण विशुद्ध और सुगंधित हो गया था। यजमान बने प्रधान आर्यरत्न माननीय श्री पूनम सूरी जी सपत्नीक सुशोभित हो रहे थे। यज्ञ–हवन की समाप्ति के उपरांत ध्वजारोहण आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी ने किया। 'महात्मा आनंद स्वामी ब्लॉक' (किड्स ग्लेक्सी) का उद्‌घाटन फीता काटकर सम्पन्न किया गया।

इसके उपरांत सभी अतिथि खेल परिसर स्थित भव्य पांडाल में बने आकर्षक मंच पर पधारे जहाँ मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्ज्वलित कर विधिवत् 'भव्य प्रांतीय आर्य महासम्मेलन एवम् 151 कुंडीय यज्ञ–महोत्सव–2014' का शुभारंभ किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि का स्वागत डॉ. यू. एस. प्रसाद तथा डी. ए. वी. के प्राचार्यों तथा प्रमंडल के अधिकारियों द्वारा किया गया। इसके पश्चात् स्मारिका 'अभ्युदय' का विमोचन किया गया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, बिहार के प्रधान डॉ. यू. एस. प्रसाद ने अपने स्वागत संबोधन में यज्ञ का मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अतिथि आर्यरत्न माननीय श्री पूनम सूरी जी ने कहा कि– यज्ञ का अर्थ दूसरे को कल्याण करना है। जबतक हम काम, क्रोध लोभ, मोह और अंहकार से ऊपर उठकर दूसरे के कल्याण के लिए नहीं सोचेंगे, तबतक हमारा जीवन यज्ञमय नहीं होगा। 'आओ, जीवन यज्ञमय बनाएँ', विषय पर विस्तार से वक्तव्य देते हुए उन्होंने 'स' वर्ण से बने चार कल्याण कारी शब्दों–संध्या, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा पर प्रकाश डालते हुए मानव जीवन में इसके महत्व की व्याख्या प्रस्तुत की और बताया कि इसके बिना हमारा जीवन कभी भी कल्याणकारी और सफल नहीं हो सकता। उन्होंने अनेक दृष्टांतों द्वारा इन शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि असल में इसका रास्ता आर्य समाज से होकर जाता है तथा इसका स्थान मूलतः आर्य समाज में ही है। आर्य समाज मनुष्यों को जाति, धर्म के पाखंडों से ऊपर उठाकर श्रेष्ठजन बनाता है। तदुपरांत मुख्य अतिथि ने असहाय परिवारों के बीच जीविकोपार्जन के लिए सिलाई मशीन का तथा निःशक्तों और निर्धन परिवारों के बीच कम्बल का वितरण किया।

इस दो दिवसीय महासम्मेलन में पधारे सभी आगत अतिथियों, आर्य समाजियों, कार्यकर्त्ताओं और भोजन विभाग के कर्मचारियों के सक्रिय सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापन करते हुए इन्द्रजीत राय, उपप्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, कोटिशः धन्यवाद किया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 11 जनवरी, 2015 से 17 जनवरी, 2015

हम तेरे सम्मुख मूढ़ हैं

●डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मूरा अमूर न वयं चिकित्वो, महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से।
शये वव्रिश्चरति चिह्वयाऽदन्, रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन्।।

ऋग् १०.४.४

ऋषिः **त्रितः आप्त्यः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**अङ्ग**) हे, (**अमूर**) अमूढ़, (**चिकित्वः**) ज्ञानी, (**अग्ने**) परमेश्वर!, (**मूराः**) मूढ़, (**वयं**) हम, (**महित्वं**) महत्ता को, (**न**) नहीं [जान पाते]।, (**त्वं**) तू, (**वित्से**) जानता है। [हमारा], (**वव्रिः**) रूपवान् आत्मा, (**शये**) सोया पड़ा है, (**जिह्वया**) जिह्वा [आदि इन्द्रियों] से, (**अदन्**) भोग करता हुआ, (**चरति**) विचरता है, (**विश्पतिः सन्**) राजा होता हुआ [भी], (**युवतिं**) प्रकृति–रूप युवति को, (**रेरिह्यते**) अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है।

● हे अग्ने! हे तेजोमय ज्ञानी प्रभु! हम मूढ़ हैं, तुम अमूढ़ हो। हम तो यह भी नहीं जानते कि 'महत्ता' किसका नाम है, महत्त्व प्राप्त करना किसे कहते हैं। हम तो समझते हैं कि सांसारिक दृष्टि से महिमाशाली होना, हाथी, घोड़े, रथ, सेवक आदि का स्वामी हो जाना ही महत्ता है। हमारा तो विचार है कि नचिकेता को यम ने जिस सांसारिक धन–दौलत, पुत्र–पौत्र, भूमि के राज्य आदि सम्पत्ति के प्रलोभन में फँसाना चाहा था, उस सम्पत्ति को पा लेना ही महत्ता है। पर हम मूढ़ अज्ञानियों के ऊपर रहनेवाले अमूढ़ ज्ञानी तुम जानते हो कि सच्ची 'महत्ता' क्या है।

हमारा रूपवान् आत्मा सोया पड़ा है, उसे यही चेतना नहीं है कि मैं किसलिए इस शरीर में आया हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है मुझे किधर जाना है। वह जिह्वा आदि इन्द्रियों से निरन्तर भोगों को भोगने में आसक्त हुआ विचर रहा है और इस भोग भोगने में ही अपने जीवन की इतिश्री मान बैठा है। भगवान् ने उसे 'विश्पति' बनाया है, शरीर–नगरी का राजा बनााया हैं, जिसमें मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि अनेक प्रजाएँ निवास करती हैं। उसे इस शरीर–नगरी को ईश्वरीय साम्राज्य बनाना चाहिए था, अध्यात्म–साधना द्वारा आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत राष्ट्र बनाना चाहिए था। शरीर–राष्ट्र को भोगों से जर्जर न कर सबल, सप्राण और समनस्क करना चाहिए था। पर धिक्कार है इस आत्मा को! यह तो एक 'युवति' को चाट रहा है, अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है। प्रकृति ही यह युवति है जो नटी बनकर आत्मा को अपने साथ नचा रही है, भोग भुगा रही है। आत्मा प्रकृति को चाट रहा है, प्रकृति आत्मा को चाट रही है। इस प्रकार आत्मा लौकिक भोग–विलासों में आनन्द ले रहा है।

हे मेरे आत्मन्! इस मूढ़ता को त्यागो, अपने अन्दर ज्ञान की ज्योति जगाओ, 'सच्ची महत्ता क्या है' इसे जानो, सोते से उठ खड़े हो, इन्द्रियों के वशीवर्ती न हो, अपितु इन्द्रियों के स्वामी बनो। प्रकृति को न चाटकर परम प्रभु के अमृत–रस का आस्वादन करो। तुम्हारा उद्धार होगा, तुम महिमाशाली बन जाओगे। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

एक ही रास्ता

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में बात हो रही थी कि केवल हितभुक्, मितभुक् से ही कार्य नहीं बनता। यदि मनुष्य ऊपर उठना चाहता है, इस जीवन को उस लक्ष्य की ओर ले जाना चाहता है जिसके लिए यह मिला है तो आवश्यक है कि ऋतभुक् भी बने। अच्छी वस्तुएँ खाए, परन्तु वे वस्तुएँ खाए जो उत्तम कमाई से पैदा की गई हों। कोई वस्तु ठीक कमाई से मिली है या नहीं, इसका बहुत से मनुष्यों को पता ही नहीं लगता। जो लोग सदा पाप का अन्न खाते रहे हों, उन्हें पाप और पुण्य में अन्तर दिखाई नहीं देता।

हितभुक्, मितभुक् और ऋतभुक् बनकर ही मनुष्य तप के मार्ग को पार करता है, जो ओ३म का जप करते समय शारीरिक साधना के लिए आवश्यक है। शारीरिक साधना या तप तो पहली पीढ़ी है। इसके बाद दूसरी पीढ़ी है ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचर्य या मानसिक साधना के लिए तीन बातें आवश्यक हैं– स्वाध्याय, सत्संग व सेवा।

स्वाध्याय क्या है? वेद, उपनिषद्, गीता, ऋग्वेद आदि भाष्य–भूमिका, सत्यार्थ प्रकाश और इसी प्रकार के अन्य ग्रंथों का प्रतिदिन पढ़ना, प्रतिदिन उन पर विचार करना– यह है स्वाध्याय। स्वाध्याय का वास्तविक अर्थ उन ग्रंथों का पाठ करना जो संतों, महात्माओं, ऋषियों और योगियों ने लिखे हैं। जो व्यक्ति प्रतिदिन अच्छे ग्रंथों का पाठ करता है, उसे उतना ही पुण्य मिलता है जितना कोई व्यक्ति धन, अन्न, हीरे, मोती और पशुओं से भरी हुई सारी पृथ्वी को दान करके प्राप्त करता है– यह है स्वाध्याय का फल।

अब आगे...

तीसरा दिन

मेरी प्यारी माताओ तथा सज्जनो!

कल मैं आपको बता रहा था कि ओ३म् की तीन मात्राओं की उपासना कैसी होती है। अ, उ, म्– ये तीन मात्राएँ इसमें हैं। तीन मात्राओं से, तीन विधियों से इसकी उपासना होती है। यह भी बताया था मैंने कि प्रश्नोपनिषद् के ऋषि ने उपासना के साथ किन–किन शर्तों को पूरा करने के लिए कहा। तीन साधनों का वर्णन कर रहा था मैं– तप, ब्रह्मचर्य तथा श्रद्धा। तप है शारीरिक साधना, ब्रह्मचर्य है मानसिक साधना, श्रद्धा है आत्मिक साधना। शारीरिक साधना का अर्थ यह है कि शरीर स्वस्थ होना चाहिए। इसके लिए तीन बातें आपको बताईं– हितभुक्, मितभुक, ऋतभुक् । अच्छी सात्त्विक वस्तुएँ खाओ, थोड़ा खाओ, नेक कमाई से खाओ। ब्रह्मचर्य का और मानसिक साधना का मार्ग भी बताया– स्वाध्याय, संत्संग और सेवा। ब्रह्मचर्य का मन से गहरा सम्बन्ध है। मन ठीक हो तो मैं ब्रह्मचारी हूँ, नहीं तो फिर ब्रह्मचर्य का अभिमान करने का लाभ नहीं। ब्रह्मचर्य का एक अर्थ उस वीर्य की रक्षा करना है जो भोजन के पचने के पश्चात् शरीर में सात अवस्थाओं के बाद बनता है। परन्तु यह केवल एक अर्थ है। दूसरा अर्थ है ब्रह्म में विचरना; ऐसा अनुभव करना कि ऊपर–नीचे, दाएँ–बाएँ, आगे–पीछे हर ओर ब्रह्म ही ब्रह्म है। ऐसा विश्वास जिसको हो जाए, जिसके हृदय में विश्वास जाग उठे कि वह महामहिमावाली माँ की गोद में बैठा है, जैसे अपनी माता की गोद में हो, तो उसके लिए डर और भय क्या है? उसके मन को डिगानेवाला कौन है? डरानेवाला कौन है?

मैंने आपको यह भी बताया कि स्वाध्याय, सत्संग और सेवा का क्या अर्थ है, उससे किस प्रकार लाभ होता है, जिस प्रकार स्वाध्याय करनेवाला ठीक उस समय गिरावट से बच जाता है जबकि उसके पाँव डगमगाने लगते हैं। वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ, गीता, रामायण, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, सत्यार्थप्रकाश और इसी प्रकार के दूसरे ग्रन्थों को प्रतिदिन पढ़ना स्वाध्याय है, परन्तु जैसा कि कल मैंने कहा था, यह स्वाध्याय का

hearyasamaj.org

केवल एक अर्थ है; दूसरा अर्थ है अपने आपको पढ़ना, अपने–आपको देखना कि यह जो अपना–आपा है, यह ऊपर चला जा रहा है या नीचे गिर रहा है? शुद्ध और पवित्र हो रहा है या गन्दा और मलिन? परन्तु यह अपना–आपा क्या है? यह स्थूल शरीर नहीं जिसे हम प्रतिदिन माँजते हैं और जो अन्त में मिट्टी में मिल जाता है। आत्मा भी नहीं क्योंकि वह न मैला होता है न साफ़, सर्वदा एक–सा रहता है, अपितु इन दोनों के साथ खड़ा सूक्ष्म शरीर जो जन्म–जन्म से आत्मा के साथ चला आया है, जन्म–जन्म तक इसके साथ चलता रहेगा। सृष्टियाँ बनती हैं और समाप्त हो जाती हैं। सूर्य, चन्द्र, तारे बनते हैं और महाप्रलय में नष्ट हो जाते हैं, पर यह सूक्ष्म शरीर तब तक चलता है जब तक इसके भाग समाप्त नहीं हो जाते। योगी जप–ध्यान लगाकर दूसरों के भूत–भविष्य को बता देते हैं। जब वे कहते हैं कि फलाँ जन्म में आत्मा फ़लाँ रूप में था, उससे पहले फ़लाँ रूप में था तो इस सूक्ष्म शरीर को देखकर। वेद ने कहा–

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।।

यजु. ३४।४।।

'जिस योगी ने अपने चित्त को योग–साधना करके सिद्ध कर लिया है वह अपने और दूसरों के भूत, भविष्यत् और वर्तमान को देख लेता है।' क्यों देख लेता है ? इसलिए कि स्थूल शरीर बार–बार बनता है और नष्ट होता है; सूक्ष्म शरीर जन्म–जन्म तक साथ चलता है। हजारों जन्म बीत जाते हैं, लाखों, कई बार करोड़ों, और सूक्ष्म शरीर समाप्त नहीं होता। पूर्व–जन्म में दो व्यक्ति भाई–बहन थे, अब पिता–पुत्र बन गए हैं, तो इनमें अगाध प्रेम होगा; यदि शत्रु थे तो इनकी आपस में कभी नहीं बनेगी। योगी लोग समाधि में जाकर प्राणों को उठाकर ब्रह्मरन्ध्र में ले जाते हैं। वहाँ जैसे कैमरे में चित्र आता है, इस प्रकार उस सूक्ष्म शरीर का चित्र आ जाता है जिसे वे देखना चाहते हैं। उसे देखकर वे बीते, आनेवाले और आज के समय की सब बातें बता देते हैं। यह सूक्ष्म शरीर सबके पास है, सबके अन्दर है; आपके अन्दर भी, मेरे अन्दर भी। इस सूक्ष्म शरीर को प्रतिदिन देखो! जैसे कोई पुस्तक पढ़ता है वैसे प्रतिदिन पढ़ो! देखो कि इसमें कोई नई मैल तो नहीं आ गई? पुरानी मैल कम हुई अथवा नहीं? कोई नई रोशनी जागी या नहीं? यह है स्वाध्याय का अर्थ। अथर्ववेद में एक मन्त्र आता है–

यथा मांसं यथा सुरा यथाक्षा अधिदेवने।
यथा पुंसो वृषण्यत स्त्रियां निहन्यते मनः।।

अथर्व. 6.7.70.1

ये चार वस्तुएँ हैं जिनसे मन पतित होता है– मांस, शराब, जुआ और पराई स्त्री या पराए पुरुष के साथ सम्बन्ध। देखो, इनमें मांस की बात सबसे पहले कही है। ये चारों बातें मनुष्य को मार डालती हैं। इतना मैला कर देती हैं कि फिर इसे शुद्ध करने में वर्षों लग जाते हैं। स्वाध्याय का अर्थ यह है कि प्रतिदिन अपने सूक्ष्म शरीर की किताब को देखो, देखो कि इन चारों में से कोई बात तो इसमें नहीं लिखी गई? यदि लिखी गई है तो सँभलो! जो प्रतिदिन पढ़ता है, प्रतिदिन देखता है वह कभी–न–कभी सँभलता है अवश्य।

ये चार वस्तुएँ हैं जिनसे मन पतित होता है– मांस, शराब, जुआ और पराई स्त्री या पराए पुरुष के साथ सम्बन्ध। देखो, इनमें मांस की बात सबसे पहले कही है। ये चारों बातें मनुष्य को मार डालती हैं। इतना मैला कर देती हैं कि फिर इसे शुद्ध करने में वर्षों लग जाते हैं। स्वाध्याय का अर्थ यह है कि प्रतिदिन अपने सूक्ष्म शरीर की किताब को देखो, देखो कि इन चारों में से कोई बात तो इसमें नहीं लिखी गई? यदि लिखी गई है तो सँभलो! जो प्रतिदिन पढ़ता है, प्रतिदिन देखता है वह कभी–न–कभी सँभलता है अवश्य।

और फिर यदि आप नहीं पढ़ोगे, तो एक–न–एक दिन वह पुस्तक पढ़नी अवश्य पड़ेगी, खुलकर वह सामने आ जाएगी और एक–एक करके उसके पन्ने उठेंगे, एक–एक करके सब–कुछ सामने आयेगा, जब साँस समाप्त होने लगेंगे। जब हिचकी बँध जाती है, जब मृत्यु सामने आकर खड़ी हो जाती है, उस समय यह पुस्तक स्वयं ही खुल जाती है। मनुष्य इसे देखता है, देखता है कि इसमें बहुत–सी बुरी बातें लिखी हुई हैं, देखता है कि इन्हें बदला नहीं जा सकता, इनके कारण आगे कितने ही कष्ट आनेवाले हैं। तब वह रोता है, आँखों से पानी की धारा बहने लगती है, आस–पास बैठे लोग कहते हैं, "अब नीर जारी हो गया, यह अब बचेगा नहीं।"

वास्तव में नहीं बचेगा। यह 'नीर' क्या है? पश्चात्ताप के आँसू जो सूक्ष्म शरीर की पुस्तक को देखकर बहते हैं। एक–एक पन्ना मरने वाले के सामने आता है। प्रत्येक पन्ने पर लिखा– तुमने यह बुरा कर्म किया, तुमने वह बुरा काम किया, और अन्तिम पृष्ठ पर लिखा है, अब तुम बिच्छू बनोगे, साँप बनोगे, सूअर बनोगे, अब तुम वहाँ जाकर गिरोगे जहाँ दुःख के अतिरिक्त कुछ नहीं। यह सब–कुछ देखकर वह अभागा रोयेगा नहीं तो और क्या करेगा? आँखों से आँसू न बहेंगे तो और क्या होगा? परन्तु,

अब पछताये होत क्या,
अब चिड़ियाँ चुग गई खेत।

अब रोने से क्या बनेगा! रोना था तो उस समय रोता जब जीवन था, जब इस मैल को धोने का यत्न हो सकता था। उस समय सँभलना चाहिए था, उस समय स्वाध्याय करना चाहिए था उस सूक्ष्म शरीर का। उस समय प्रयत्न करके उस पर अच्छी बातें लिखनी चाहिए थीं।

परन्तु सभी लोग तो अन्तिम समय पर नहीं रोते। जो स्वाध्याय करते हैं सूक्ष्म शरीर का, जो प्रतिदिन उसपर अच्छी बातें लिखने का यत्न करते हैं उनके सामने अन्तिम समय पर यह पुस्तक आती है। उसके एक पन्ने पर लिखा है, तूने फ़लाँ समय एक अनाथ बच्चे को फ़ीस देकर पढ़ाया; एक और पन्ने पर लिखा है, फ़लाँ समय वह अंधी बुढ़िया रास्ता भटक गई थी तो तूने उसका हाथ पकड़कर उसे ठीक रास्ते पर चला दिया; फ़लाँ जगह कुआँ बनवा दिया; तालाब बनवा दिया; मन्दिर बनवा दिया; और अन्तिम पन्ने पर लिखा है, अब तू उत्तम जीवन में जायेगा, ऊँचे लोकों में जायेगा। ऐसा आदमी रोता नहीं। रोये क्यों? मैंने गन्दे–फटे हुए कपड़े पहन रखे हैं, कोई मुझे सुन्दर कपड़े लेकर दे दे तो क्या मैं रोऊँगा? एक व्यक्ति टूटे–फूटे झोंपड़े में रहता है, आप उसे महल बनवा देते हैं, कहते हैं– "चल, इस महल में चलकर रह, यह महल तेरा हुआ।" तब यह रोयेगा नहीं, हँसेगा। पुकारकर कहेगा–

जा मरने से जग डरे, मेरे मन आनन्द।
मरने ते ही पाइये, पूर्ण परमानन्द।।

यह है स्वाध्याय की महिमा! प्रतिदिन स्वाध्याय करने से मन ऊपर उठता है, मानसिक साधना के मार्ग पर मनुष्य आगे बढ़ता है।

अब सत्संग की बात सुनिये! आर्यसमाज करोलबाग में प्रतिदिन सत्संग होता है। आप इसमें आते हैं, बहुत बड़े भाग्य हैं आपके और धन्य हैं आप और ये लोग जो इस सत्संग का प्रबन्ध करते हैं। जैसे कोई मन्दिर में झाड़ू देता है, उसकी गंदगी साफ़ कर देता है, इसी प्रकार यह सत्संग है। यह वह गंगा है जिसके मन का मैल धुल जाता है। ऐसा जादू है जो अनजाने में प्रभाव करता है।

एक वकील की बात सुनाता हूँ आपको। वकील साहब कभी–कभी सत्संग में जाते थे। उनका सात वर्ष का बच्चा भी साथ जाता था। वहाँ एक आदमी ने एक बार गाना गाया, *"कड़वे बोल न बोल!"* बच्चे को यह गाना अच्छा लगा, उसने याद कर लिया। जब कभी उसको समय मिलता, तब इस गीत को गाता फिरता– *"कड़वे बोल न बोल!"* एक दिन वकील साहब और उसकी धर्म–पत्नी में हो गई अनबन; रूठ गए दोनों। कई दिन बीत गए, एक–दूसरे से बोले नहीं। पति–पत्नी कब तक रूठे रहें! पति के मन में बार–बार आये कि वह मान जाये, पत्नी के मन में भी आये, परन्तु दोनों की यह इच्छा थी कि पहल दूसरा करे! पति दफ्तर से आते, अपने कमरे में बैठे रहते; पत्नी खाना बनाकर नौकर के हाथ भेज देती; पहल होने में न आती। एक दिन वकील साहब दफ्तर से आये, अपने कमरे में चले गए। इनके नन्हें बच्चे ने इनके कमरे में गाना शुरू किया, *"कड़वे बोल न बोल!"* वकील साहब के हृदय में एक आशा जाग उठी; बच्चे से बोले, "बेटा, यह गीत अपनी माँ के कमरे में जाकर गा!" बच्चा माँ के कमरे में गया; वहाँ जाकर गाने लगा, *"कड़वे बोल न बोल!"* माँ ने कहा, "यहाँ क्या गाता है, जा अपने पिताजी के कमरे में जाकर गा!" बच्चा फिर पिता जी के कमरे में पहुँचा; बोला, *"कड़वे बोल न बोल!"* पिता ने कहा, "अरे, तुझे माँ के जाकर गाने को कहा था। वहाँ जाकर गा!" बच्चा फिर माँ के कमरे में पहुँचा। माँ ने कहा, "अरे, तुझे पिता के कमरे में जाने के लिए कहा था, जा वहाँ जाकर गा!" बच्चे ने दोनों कमरों के बीच में जाकर कहा, "तुम दोनों तो मुझे गाने नहीं देते, मैं अब यहाँ खड़ा होकर गाऊँगा।" और वह गाने लगा, *"कड़वे बोल न बोल, रे भाई, "कड़वे बोल न बोल!"* पिता और माता ने बच्चे की भोली बोली को सुना। दोनों हँस पड़े। हँसी के फ़व्वारे में क्रोध की दीवार टूट गई। दोनों बच्चे के पास आ गये। एक–दूसरे की आँखों में देखकर हँसते हुए बोले, "कड़वे बोल न बोल!" घर में मुस्कराहट चमक उठी, क्रोध के बादल टुकड़े–टुकड़े हो गये। रोशनी जाग उठी।

क्यों? इसलिए कि वह नन्हा–सा बच्चा सत्संग से छोटा–सा गीत सीख आया था, *"कड़वे बोल न बोल!"* अरे, यह सत्संग जादू है! इस प्रकार प्रभाव करता है कि कई बार पता नहीं लगता कि कब प्रभाव हुआ।

विश्वामित्र का महर्षि वसिष्ठ से झगड़ा था। विश्वामित्र बहुत विद्वान थे। बहुत तप उन्होंने किया। पहले महाराजा थे, फिर साधु हो गये। वसिष्ठ सदा उनको राजर्षि कहते थे। विश्वामित्र कहते थे, "मैंने ब्राह्मणों जैसे सभी कर्म किये हैं, मुझे ब्रह्मर्षि कहो।" वसिष्ठ मानते नहीं थे; कहते थे, "तुम्हारे अन्दर क्रोध बहुत है, तुम राजर्षि हो।"

शेष अगले अंक में....

thearyasamaj.org

गीता के बहुमूल्य रत्न

● भवानीलाल भारतीय

प्रा

ईश्वर का सर्वव्यापकत्व तथा विश्व संचालन

प्रायः पाठकों को यह भ्रान्ति होती है कि गीता में अद्वैतवाद या विशिष्टा–द्वैतवाद का प्रतिपादन है किन्तु सत्य तो यह है कि गीता में ईश्वर, जीव तथा प्रकृति का स्पष्ट पृथकशः वर्णन है। निम्न श्लोक को देखें–

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया।। 18/61
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात् परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्" 8/62

यहां स्पष्ट कहा गया है कि समस्त प्राणियों के अन्तर्तम में परमात्मा विराजमान है जो सारे प्राणियों की गतिविधियों का संचालक या मार्गदर्शन उसी प्रकार करता है जैसे एक यर्मज्ञ इंजीनियर अपने यंत्रों का कौशलपूर्वक संचालन करता है। अनेक लोग 'स्वभाव' को सृष्टि का कारण बताते हैं तो अन्य काल के द्वारा विश्व संचालन होना मानते है। परन्तु गीता का यह श्लोक सीधे श्वेताश्वतर उपनिषद् के तत्त्व को प्रस्तुत करता है जिसमें कहा गया है कि इस ब्रह्मचक्र (सृष्टि रचना) का प्रवर्त्तक वह देव (परमात्मा) है। इसी प्रकार अन्य प्रसंग में क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का अर्थ स्पष्ट करते हुए इन्हें प्रकृति तथा जीवात्मा के लिए प्रयुक्त माना गया, साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया है कि वह पुरुष (परमात्मा) इनसे भिन्न है जो परमात्मा नाम से पुकारा जाता है। इसी ईश्वर की शरण में जाने के लिए उक्त श्लोक में संकेत किया गया और कहा गया कि सर्वतोभावेन उसी ईश्वर की शरण में जाना चाहिए। उसकी कृपा से जीवात्मा से परम और स्थायी शान्ति मिलेगी।

प्रायः यह समझा जाता है कि परमात्मा ही हमारी अच्छी बुरी क्रियाओं के लिए जिम्मेवार है। परन्तु दूसरी बात है कि जीव कर्म करने में स्वतंत्र है परन्तु परमात्मा अन्तस्थ होने का कारण मार्गदर्शन अवश्य देता है। परन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि जिस प्रकार एक बड़े महायंत्रालय (कारखाना) का संचालन एक प्रमुख मशीन का बटन करता है इसी प्रकार समस्त जड़जगत् (महाभूतों) को गति देने वाला वह परमात्मा ही है। उसके लिए उक्त श्लोक में कहा गया है कि वे चेतन परमात्मा स्वयंसंचालन शक्ति से समस्त भूत जगत् को गति प्रदान करता है और चेतन जीवात्मा को भी गति, प्रेरणा, उत्साह, प्रोत्साहन मार्गदर्शन देता है। यहां जीवेश्वर भेद स्पष्ट बताया है।

भगवद्गीता का एक सदाचार मूलक श्लोक

हमारे शास्त्रों ने सत्यासत्य धर्माधर्म, कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य, न्याय–अन्याय के निर्णय के लिए वेद, स्मृति, सदाचार (श्रेष्ठ पुरुषों का आचरण) तथा स्वयं की आत्मा की स्वीकृति को प्रमाण माना है। यहां सदाचार को तीसरा स्थान मिला है। गीता ने सदाचार को अन्यों के लिए भी अनुकरणीय मानकर सभी को ऐसा ही आदर्श उपस्थित करने के लिए कहा है, जिसे अन्य भी अपनायें। प्रासंगिक श्लोक है–

यद् यद् आचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनाः।
स यत प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते।।

श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं, सामान्य लोग भी उसी का अनुकरण करते हैं। इसलिए कहा है– **'रामवत् वर्तितव्यम् न तु रावणवत्'** हमें राम जैसे मर्यादा पुरुषों के आचरण को अपनाकर श्रेष्ठ आर्य का आदर्श उपस्थित करना चाहिए न कि रावण की भांति, दुराचारी, अत्याचार के समस्त राक्षसों के काम। सम्भवतः सदाचार की शिक्षा देने वाला यह गीता का महत्वपूर्ण श्लोक है।

वैदिक वृष्टि विज्ञान : अन्न से अक्षर तक का सफर

भगवद्गीता के तीसरे अध्याय के 14 वें तथा 15वें श्लोकों में अन्न, पर्जन्य (बादल) यज्ञ, कर्म, ब्रह्मविद्या तथा अक्षर (ईश्वर) का क्रम आया है। यह स्पष्ट तथ्य है कि समस्त प्राणियों का जीवनाधार अन्न है। अन्न (भोजन) के महत्व को सर्वत्र स्वीकार किया गया है। वेद में परमात्मा को अन्नपति कहा गया है कि जो हमें ऐसा अन्न प्रदान करता है जो रोग उत्पन्न न करने वाला तथा स्वरूप बनाने वाला हो। उपनिषदों में **'अन्नं न निंद्यात्'** कहकर अन्न (भोजन पदार्थ) की निंदा न करने के लिए कहा है। मन्वादि स्मृतयों ने अन्न, भोजन, जल आदि के विषय में अनेक नियमों का उल्लेख किया है। 'अन्नं वै ब्रह्म कर अन्न की महिमा कही गई है।

यह अन्न यदि प्राणियों का आधार है तो इसकी उत्पत्ति वर्षा (पर्जन्य–बादल) से होती है। यदि वर्षा न हो तो दुष्काल होगा फसल नहीं होगी। लोग भुखमरी के शिकार होंगे। इसलिए ऐसे प्रयत्न किये जाते हैं कि यथा आवश्यकता वर्षा हो। इसके लिए आज के विज्ञान ने तो अनेक उपाय बताये ही हैं, वैदिक ऋषियों ने यज्ञ–विद्या के द्वारा पर्जन्य वृष्टि के विधान बताये हैं। विगत वर्षों में इन्दौर के पं. वीरसेन वेदश्रमी द्वारा बनाई वृष्टियज्ञ विधि की चर्चा रही। अनेक प्रयोगों के द्वारा वृष्टि कराई गई। इस पर भविष्य में अधिक अनुसंधान अपेक्षित है।

वेदों में 'पर्जन्योऽभिवर्षतु' जैसे संदर्भों से ज्ञात होता है कि वेद ऐसे यज्ञों का विधान करते हैं जिनसे मनोनुकूल वर्षा की जा सकती है। **'यज्ञात् भवति पर्जन्यो'** कहकर कृष्ण इसी तथ्य की पुष्टि कर रहे हैं। इस यज्ञ को कर्म करके ही सम्पादित किया जा सकता है। यदि हम कर्म के मार्ग का सर्वथा त्याग कर देते हैं तो यज्ञादि सभी कर्म समाप्त हो जायेंगे। गीता में पदे पदे निष्फल (फल की कामना न कर) परोपकारार्थ यज्ञ करने का विधान किया गया है। वैदिक विचारधारा मे ज्ञान और कर्म दोनों पर समान रूप से आचरण करने को कहा गया है।

अगले श्लोक में कर्म को ब्रह्म से उत्पन्न बताया गया है। यह ब्रह्म वेद के लिए प्रयुक्त हुआ है। यदि हमें यज्ञों की विधि के जानना है तो उसके लिए वेदों के उप विधान को जानना होगा जो वृष्टि योग से सम्बन्ध रखते हैं। यह वेद परमात्मा (अक्षर) से हमें प्राप्त हुए हैं। इसलिए 'ब्रह्माक्षर समुद्भवम्' कहा गया। अन्ततः कृष्ण इससे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यह यज्ञ निश्चय ही अक्षर ब्रह्म में प्रतिष्ठित है। इस प्रकार अन्न से प्राणियों का जीवन संचालित होना, बादलों से वर्षा होना और इन बादलों का यज्ञ से बनना, यज्ञ का वेदाश्रित होना और अन्ततः यह सारी परोपकारमय कर्ममाला परमात्मा द्वारा ही संचालित है।

एक हास्य कथा मूर्तिपूजा की निरसारताः

राजस्थान के ग्राम की बात है। एक अग्रवाल वैश्य पुत्रहीन था। उसे किसी ने कहा, भैरवजी को भैसा भेंट करो अर्थात् उसी बलि दो, भैरव प्रसन्न होकर तुम्हें पुत्र देंगे। सौभाग्य से उसे पुत्र प्राप्ति हो गई है। अब भैरव को उसकी भेंट (भैसे की बलि) कैसे दें, अहिंसक वैश्य। उसने एक तरकीब सोची। एक भैंसा खरीदा और मोटे रस्से से बंधकर भैरव मूर्ति के पास लाया। उसे प्रस्तर के भैरव की मूर्ति से बांधा तथा बोला– "भैरव बाबा, मैं तो अहिंसक बनिया हूँ, आपकी बलि प्रस्तुत है, यथाइच्छा इसका उपयोग करें।" वह तो चला गया और भैंसे ने अपने बंधन को हटाने के लिए जोर लगाया तो रस्से से बंधी मूर्ति उखड़ गई। भैंसा उसे लिए भागा। आगे आगे भैंसा, पीछे रस्से से बधे भैरव। गांव के सीमान्त पर देवी अपने मठ में बैठी थी उसने यह दृश्य देखा तो बोली "अरे भैरुं यह क्या हाल है? भैंसा तुझे खींचे लिए जा रहा है।" भैरव क्षुब्ध– होकर बोले– "मठ में बैठी मटका करे (आंखें मंटकाती है? अग्रवाल को बेटा देती तो तेरा भी यही हाल होता।

315 शंकर कालोनी,
श्रीगंगानगर

यह लोकैषणा नहीं तो क्या है?

● भावेश मेरजा

कल मुझे मध्यप्रदेश के एक योग साधना न्यास द्वारा आयोजित यज्ञ, योग तथा प्राकृतिक चिकित्सा शिविर के कार्यक्रम का आमंत्रण पत्रक मिला। प्रवचन कर्ता तथा यज्ञ आदि कराने वाले प्रमुख विद्वानों के नाम पढ़कर मुझे आश्चर्य हुआ। उसमें एक संन्यासी महानुभाव के नाम के आगे ''ब्रह्मर्षि'' विशेषण लगाया गया है और एक संन्यासिनी देवी के नाम के आगे ''ऋषिका'' विशेषण लगाया गया है।

मैंने सोचा कि क्या आर्य समाज में वास्तव में ब्रह्मर्षि और ऋषिका विद्यमान हैं ?

मैंने आमंत्रण पत्रिका के कवर पर छपे फोन नंबर पर सम्पर्क किया। फोन उठाने वाले वही संन्यासी थे, जिन्होंने अपने नाम के आगे ब्रह्मर्षि विशेषण लगाया था। मैंने उनसे कहा कि आप अपने स्वयं के नाम के आगे ब्रह्मर्षि विशेषण लगाते हो इससे आपकी लोकैषणा प्रकट होती है। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। आप अगर वास्तव में ब्रह्मर्षि हैं और आपसे भिन्न लोग आपके लिए यह विशेषण प्रयुक्त करते हैं तो बात कुछ समझ में भी आ सकती है। मगर आप स्वयं ही अपने लिए ऐसे विशेषण प्रयुक्त करें यह उचित नहीं है। मेरी यह बात स्वामी जी को कैसे पसंद आती? उन्होंने अपने इस विशेषण का बचाव करने का प्रयास (प्रयास के अधिक हठाग्रह) किया। मुझ पर क्रोध भी किया। मैंने कहा कि ये लक्षण ब्रह्मर्षि से तो मेल नहीं खाते। हां, इससे तो **''क्रोध–ऋषि''** नाम अवश्य सार्थक होता है !

कुछ ही देर बाद उसी नम्बर से इन्दौर के एक अन्य सज्जन का मुझे फोन आया। पूछने पर बताया कि वे वेदालंकार हैं। उन्होंने उक्त स्वामी जी के ''ब्रह्मर्षि'' विशेषण की सार्थकता सिद्ध करने का प्रयास किया। मैंने उनकी बात को अस्वीकार करते हुए बताया कि ऐसा करना मान–सम्मान की लालसा या लोकैषणा ही माना जायेगा। आप वेदालंकार हैं, आपको यह बात समझनी चाहिए। उन्होंने मुझे कहा कि एक बार इस योगाश्रम में आकर तो देखो, तब पता चलेगा कि ये विशेषण

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

thearyasamaj.org

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

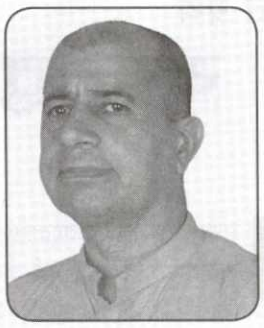

शंका– किस प्रकार के कर्मों के आधार पर स्त्री या पुरुष का जन्म मिलता है?

समाधान :– भई, ये पूरे–पूरे तो मुझे भी समझ में नहीं आए, तो मैं आपको कैसे बताऊँ कि कौन से कर्म करेंगे तो स्त्री बनेंगे, और कौन से कर्म करेंगे तो पुरुष बनेंगे। मुझे इतना समझ में आया कि बस अच्छे से अच्छा कर्म करो। अब भगवान ने जो बनाना होगा, बना देगा।

कई लोगों के दिमाग में यह बात बैठी हुई है कि, स्त्री जन्म अच्छा है। कई लोगों के दिमाग में यह बात बैठी है कि पुरुष जन्म अच्छा है। जो सत्य है, वो सत्य है। सत्य को जानना–समझना चाहिए और सत्य को खुलकर स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि उससे हमारी उत्पत्ति होती है।

● वैसे तो स्त्री और पुरुष दोनों एक ही योनि में हैं, मनुष्य योनि में। **मनुष्य योनी की दृष्टि से दोनों बराबर हैं।** इसमें कोई ऊँचा–नीचा नहीं है। क्या स्त्रियों का बस में आधा टिकट लगता है और पुरुषों का पूरा लगता है? नहीं न। इस हिसाब से दोनों भारत के समान नागरिक हैं। दोनों को समान अधिकार हैं, वोट देने का अधिकार बराबर है। अधिकार की दृष्टि से दोनों बराबर हैं। जहाँ स्त्रियों का आधा वोट है, वह गलत बात है। यह वेद के अनुसार अन्याय है। **वेद में स्त्री और पुरुष दोनों को बराबर बताया है।** अधिकार तो दोनों का एक दूसरे पर बराबर होता है।

व्यावहारिक दृष्टि से किसी–किसी क्षेत्र में स्त्रियाँ ऊपर हैं, पुरुष छोटे हैं। किसी क्षेत्र में पुरुष बड़े हैं तो स्त्रियाँ छोटी हैं। वो अलग–अलग क्षेत्र हैं। कौन–सा क्षेत्र है इसमें? अब ये जानेः–

● वेद कहता है– **जब बालक के साथ माता–पिता का संबंध हो, तो माता बड़ी और पिता छोटा।** और माता का नंबर पहला, माता सबसे पहली गुरु है। अगर पहली गुरु बुद्धिमान हो, तो बच्चा बुद्धिमान बनेगा और पहली गुरु ही मूर्ख हो तो बच्चा मूर्ख बनेगा।

● शास्त्रों में स्त्री को 'पूज्य' कहा है। उसे अधिक सम्मान देने का विधान है। यहाँ पुरुष छोटा और स्त्री बड़ी। यह एक क्षेत्र है।

● और दूसरा क्षेत्र है, पति–पत्नी का। **जब पति–पत्नी का आपस में संबंध हो, तो वहाँ पति बड़ा और पत्नी छोटी।** वहाँ यह नियम है। अब बताइए, क्या चाहिए आपको, एक तरह पुरुष बड़े हैं, एक तरह स्त्रियाँ बड़ी हैं।

● हाँ, यह ठीक है कि कहीं **व्यावहारिक दृष्टि से कुछ समस्याएं पुरुषों के साथ कम हैं, और स्त्रियों के साथ कुछ अधिक हैं। कुछ हमारी जिम्मेदारियाँ रहती है व्यवहार की। उसमें स्त्रियों पर बंधन अधिक रहते हैं, पुरुषों पर उतने नहीं होते हैं। स्त्रियों का जीवन अधिक बाधित रहता है। इनका माँ बनना पड़ता, पुरुष तो बनेगा नहीं। शुद्धि की दृष्टि से स्त्री का शरीर ज्यादा गंदा होता है। महीने के कुछ दिन शारीरिक दृष्टि से विवशता रहती है। पुरुष का शरीर सख्त और बलवान होता है, स्त्री में कोमलता होती है। वातावरण को सहन करने की क्षमता पुरुषों में अधिक होती है। पुरुष अधिक कार्य कर सकता है। स्त्री का शरीर जल्दी विकसित होता है और बीस–पच्चीस साल के बाद शिथिल हो जाता लेकिन पुरुषों में चालीस साल तक बढ़ता है। इसलिए विद्या आदि पढ़ने का अवसर पुरुष में अधिक होगा।**

● पुरुष तो अकेला घूम लेगा, खा लेगा, कहीं रात को दो बजे प्लेटफार्म पर सो जाएगा, उससे कोई पूछने वाला नहीं। वो तो अकेला ही पूरे देशभर में घूम आएगा। पर स्त्रियों को इतनी सुविधा नहीं है। उस दृष्टि से हमको स्वीकार करना पड़ता है। बाकी तो मनुष्यता की दृष्टि से दोनों बराबर हैं। इसमें कोई ज्यादा हीन भावना (इंफीरियरटी कॉम्पलेक्स) की जरूरत नहीं है।

● आयु के कारण अनुभव में भेद होता है। पति अधिक आयु का होता है। इसलिए उसका अनुभव ज़्यादा होता है। **परीक्षाफल की दृष्टि से स्त्री आगे है क्योंकि पुरुष उतनी मेहनत नहीं करते। इतिहास देखेंगे तो पुरुष ज्यादा विद्वान रहे हैं। विद्या का आरंभ हमेशा पुरुषों से हुआ है। ईश्वर हमेशा वेद ऋषि (पुरुष) को देता है।**

● वेद में लिखा है, स्त्रियाँ बेशक पढ़ सकती हैं। 'सत्यार्थ–प्रकाश' में महर्षि दयानन्द जी ने लिखा– अगर ईश्वर का प्रयोजन स्त्रियों को पढ़ाने में न होता, तो इनके शरीर में आँख और कान क्यों रखता। वे भी वेद पढ़ सकती हैं, वे भी वैराग्य प्राप्त कर सकती हैं, **वे भी संन्यास ले सकती हैं। पर वे प्रायः संन्यास लेती नहीं, झगड़े करती हैं, तो हम क्या करें?** वे प्रायः झगड़ा ज्यादा करती हैं, राग–द्वेष ज्यादा करती हैं, वेद पढ़ती नहीं हैं, तो दोष इनका है। बाकी इनका चाँस पूरा है।

"ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्" अर्थात् अथर्ववेद में लिखा है कि – "कन्या को भी ब्रह्मचर्य का पालन करके, वेद पढ़ने का पूरा अधिकार है। और विद्या पढ़कर फिर विवाह करना चाहिए।" तो छूट सबको है, बाकी कोई करे या न करे, वो उसकी मर्जी।

● सामान्यतः पुरुष स्त्री नहीं बनना चाहता, लेकिन स्त्री पुरुष बनना चाहती हैं। इस दृष्टि से पुरुष कुछ बड़ा सिद्ध होता है।

शंका– स्वामी सत्यपति जी ने इतने अच्छे कर्म किए, फिर भी उन्हें रोगों से क्यों पीड़ित होना पड़ रहा है?

समाधान :– उन्होंने अपनी ओर से तो अच्छे कर्म किए। पर क्या दूसरों ने भी उनके साथ अच्छे कर्म किए? क्या उनको वैसी सारी अनुकूलताएं मिलीं, जैसी मिलनी चाहिएँ? नहीं मिलीं। बहुत सारे कारण होते हैंः–

● अपने कारण से भी कहीं–कहीं गलतियाँ होती हैं। **व्यक्ति अपने खराब कर्मों के कारण रोगी या दुःखी हो सकता है।** भारत पाकिस्तान जब से विभाजित हुआ, तब से स्वामी सत्यपति जी ने अपना जीवन बदला। इसके बाद तो उन्होंने अच्छे–बुरे काम किए, इसमें कोई संशय नहीं है। पर उसके पहले का जीवन गुरुजी बताते हैं, पहले कुछ अनपढ़ थे, स्कूल में गये नहीं, पशु चराते थे और बचपन में कुछ गलतियाँ, कमियाँ हो सकती हैं। कुछ उसका परिणाम है।

● **दूसरों के अन्याय से उसको परेशानी भोगनी पड़ सकती है।** जैसे स्वामी दयानंद ने अच्छा काम किया, वेद का प्रचार किया। फिर भी कितने लोगों ने उनको पत्थर मारे, जहर खिलाया,साँप फेंके, जितने आरोप लगाए। ये कोई उनके अच्छे कर्मों का फल थोड़े ही था। यह तो ईर्ष्यालु लोगों का अन्याय था। कितनी बार लोगों ने जहर पिला दिया धोखे से। इस प्रकार दूसरों के अन्याय से भी हमको परेशानी होती हैं, कष्ट होता है, रोग आ जाते हैं, दुःख आ जाते हैं।

कुछ बाद में जो स्वामी सत्यपति जी को खाने–पीने की सुविधा मिलनी चाहिए थी, जो ठीक तरह से नहीं मिली।

● **हो सकता है कोई पैतृक–दोष भी हो।** जो आनुवांशिक (जेनेटिक) बोलते हैं, हेरीडिटी से सम्बन्धित। हमारे पैतृक–दोष के कारण भी कुछ रोग और दोष आ सकते हैं। कुछ वो कारण भी हो सकते हैं। यह जो हेरिडिटी से आ रहा है, यह प्रारब्ध है। ऐसा नहीं होता कि पिछले जन्म के कर्मों का फल अचानक से ईश्वर यूँ चिपका दें। प्रारब्ध का जो फल है, वो हेरिडिटी से मिलेगा, पैतृक रोगों के रूप में मिलेगा, वहीं से आएगा जेनेटिकली।

● **कहीं प्राकृतिक कारणों से भी हमको रोग और दुःख आ सकते हैं।** और बहुत सारे कारण हैं।

इस जन्म के दुःख के तीन कारण हैंः– अपनी ग़लतियाँ, दूसरों के द्वारा किया गया अन्याय और प्राकृतिक दुर्घटनाएँ। आनुवांशिक को मिलाकर, दुःख के चार कारण हो सकते हैं। इनमें से कौन सा कारण कितना रोग या दुःख उत्पन्न कर रहा है, यह पूरा–पूरा जानना–समझना और कहना बहुत कठिन है।

–दर्शनयोग महाविद्यालय
रोजड़वन, साबरकांठा, गुजरात

वैदिक प्रार्थना

**अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं
तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।** यजु. 1.5

Today I take a vow;
Lord, help me to fulfil it.
I take a vow to follow
the path of TRUTH from this moment
Help me Lord, in my voyage
from falsehood towards TRUTH.

**ओ व्रतों के दिव्य रक्षक
अग्नि, यह संकल्प मेरा–
व्रत करूं, पूरा सकूं कर,
यह कृपा कर, व्रत सफल हो,
मैं असत्य त्याग, धारण
सत्य को करता इसी क्षण।**

thearyasamaj.org

चर्चित ग्रंथ

रामसेतु : राष्ट्रीय एकता का ज्वलन्त केन्द्र बिन्दु

● हरिकृष्ण निगम

रामसेतु: राष्ट्रीय एकता का प्रतीक; सुब्रह्मण्यन स्वामी, पूर्व केन्द्रीय विधि मंत्री, आई.आई.टी, दिल्ली में अर्थशास्त्र के भूतपूर्व व्याख्याता और प्रख्यात हार्वर्ड विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य; प्रकाशक– हर आनन्द पब्लीकेशन्स लि. ई–49/3 ओखला इण्डिस्ट्रियल एरिया, फ़ेज़–2, नई दिल्ली–110020 प्रकाशन वर्ष–2000, पृष्ठ संख्या–220, (सजिन्द); मूल्य– रु. 495

प्रसिद्ध लेखक एवं चर्चित एवं प्रभावशाली राजनीतिज्ञ सुब्रह्मण्यन स्वामी पिछले कई दशकों से देश के विकास और इसकी बदलती राजनीति के प्रखरतम अन्तरंग साक्षी रहे हैं और उनकी प्रस्तुत कृति पहले के उनके अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों की कड़ी में आज सर्वाधिक विद्वतापूर्ण एवं शोध से भरा अभिलेख माना जा रहा है। उनके द्वारा पहले के तीन प्रणीत ग्रंथों के नाम हैं– *"हिन्दूज अण्डरसीजः द वे आउट"*, *"श्री लंका इन क्राइसिसः इण्डियाज् औपशन्स,"* तथा *"टेरेरिज्म इन इण्डियाः ए स्टेटजी ऑफ डिटेरेन्स फॉर इण्डियाज् नेशनल सिक्यूरिटी।"* लेखक की प्रस्तुत कृति 'रामसेतु' का अध्ययन उसके ऐतिहासिक, पुरातात्विक, आर्थिक, पर्यावरण व राष्ट्रीय सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य एक श्रम–साध्य परियोजना के रूप में अन्तिम 50 पृष्ठों के उन मौलिक परिपत्रों, संलग्नो कों, तकनीकी रिपोर्टों, तत्कालीन सम्बन्धित हिन्दी–अंग्रेजी की प्रेसविज्ञप्तियों अथवा सेतुसभुद्रम् शिप चैनल प्रोजेक्ट जैसे प्राधिकरणों के पर्यावरण प्रभावित करने वाले समय समय पर किए गए आंकलनों को अभिलेखों के उद्धरणों से बहुमूल्य व अनूठा बनाने का प्रयास किया गया है। इसमें कुछ बड़े, राजनीतिक दलों के आधिकारिक पत्राचारों के साथ चाहे जनतापार्टी के तत्वाकालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल को लिखे पत्र हों, अथवा *आल इण्डिया आर्गनाइजेशन ऑफ इमाम्स ऑफ मौस्क्स* के, अध्यक्ष हजरत मौलाना जमील अहमद इल्यासी का 17.1.08 का सुब्रह्मयय्यन स्वामी के रामहेतु संरक्षण के आंदोलन का समर्थन पत्र हो, या ए.डी.एम.के. की अध्यक्षा जयललिता या केन्द्रीय जहाजरानी मंत्री डी.एम.राव अथवा डी.एम. के करुणानिधि या अन्य महत्वपूर्ण सरकारी परिपत्र हों– इन सभी का ग्रंथ के अन्त में समावेश लेखक की कृति में एक ऐसा कड़वापन– कसैलापन लाता है जो पत्रकारिता की दुनियां में आज लुप्त होता जा रहा है, जिसकी तलाश पाठकों को लगातर और हमेशा रहती है।

लेखक ने रामसेतु में समुद्र तल पर किसी भी प्रस्तावित तोड़फोड या ड्रेजिंग का विरोध आज मात्र इसलिए नहीं किया कि यह पवित्र तीर्थ रामेश्वर में सदियों से समुद्र के तल में पाक स्ट्रेट और मन्नार की खाड़ी में राम के नाम से जुड़ा है बल्कि सरकारी (एस.एस.सी.पी.) सेतुसमुद्रम् शिप चैनल प्रोजेक्ट आर्थिक रूप से मात्र सफेद हाथी बनकर रह जाएगा और इससे पर्यावरण का विनाश कई गुना खतरनाक बन सकता है। देश की प्राचीन संस्कृति व सनातन धर्म के इस जीवन सेतु और सारी शैवाल चट्टानों का विनाश कर देगा जिनको जनश्रुतियों के अनुसार व रामायण के प्राचीन साक्ष्यों के अनुसार भगवान राम के लिए समुद्र में बनाया गया था। वह समुद्र के भूगर्भ का तटीय मार्ग (काज़वे) सिर्फ प्राकृतिक निर्माण नहीं और *ज्योग्राफिक्स सर्वे आफ इंडिया* की खोजों के बाद यह भी सिद्ध हुआ है कि यह मानवनिर्मित है। 'नासा' और अपने देश के उपग्रहों से लिए गये चित्रों द्वारा भी यह सत्यापित हो चुका है। लेखक का तर्क है यह आवश्यक है कि स्वतंत्र बहु अनुशासनीय जांच अपने विषयों के प्रमुख वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों द्वारा की जाए जिससे सरकार और *ज्योलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया* अपने निस्कर्षों को गुप्त न रख सके।

आज केवल हम नहीं बल्कि श्रीलंका एवं पश्चिम के अनेक इतिहासकार व विशेषज्ञ भली भांति जानते हैं कि रामसेतु एक विस्मयजनक और ऐतिहासिक ऐसा (काज़वे) है जो भौतिक रूप से उत्तर में तूफानी बंगाल की खाड़ी को दक्षिण में मन्नार की शान्तिपूर्ण खाड़ी से अलग करता है। वैसे आध्यात्मिक व भावनात्मक रूप से यह उत्तर और दक्षिण भारत को जोड़ता है। इस स्थल पर 1.5 से 2.5 मीटर मूंगा की एक मोटी चट्टान का एक रास्ता उथले समुद्र में बना है जो वैज्ञानिकों द्वारा मार्ग के रूप में सबसे पहले वाल्मीकि की रामायण में वर्णित है। प्राचीन भवन निर्माताओं व शिल्पकारों ने पत्थर की इस मोटी पपड़ी का लाभ उठाकर, बड़े स्तर पर प्रस्त खण्ड और चट्टानों का उपयोग कर दूर दूर तक जहां तक वे ढोयी जा सकती थीं निर्माण किया। शान्त समुद्री वातावरण के कारण मूंगों की दुर्लभ प्रजातियों और नए– (आर्गेनिज्म) को मन्नार की खाड़ी में पनपने दिया जब कि बंगाल की खाड़ी जो शान्त, निर्मल नहीं थी वहां ऐसा नहीं हुआ क्योंकि रामसेतु की – (रिज) के कारण वहां ऐसा वातावरण न था। वैज्ञानिकों का कहना कि रामसेतु के अस्तित्व के कारण कोई 'सुनामी' का विनाश नहीं हुआ जो –'फ़नल' प्रभाव द्वारा क्षति पहुंचा सकती थी।

लेखक के अनुसार तमिलनाडु के मुख्यमंत्री करुणानिधि और उनके प्रियपात्र केन्द्रीय शांपिग एण्ड रोड ट्रान्सपोर्ट मंत्री, टी.आर.बालू जनता से झूठ बोलकर दुष्प्रचार कर रहे थे कि रामसेतु का कोई अस्तित्व नहीं था इसलिए एस.एस.सी.पी. को पूरा सहयोग देना चाहिए। यह भी सच है कि 8 अप्रैल 1999 को पर्यावरण और वन मंत्रालय ने अपना विचार व्यक्त विचार था कि इस परियोजना के उपर्युक्त प्राधिकरण को भंग करना चाहिए, क्योंकि यह पर्यावरण का पूरी तरह नाश कर सकता है। यह निष्कर्ष एन. ई. ई. आर. आई की 1998 की जांच रिपोर्ट के आधार पर निकाला गया था। फिर भी 2004 में जहाजरानी मंत्रालय ने इस निर्णय को बिना कारण बताए निरस्त कर दिया था। केन्द्रीय मंत्री महोदय द्वारा इसी बीच एक रिपोर्ट जो डा. एस. बद्रीनारायण, पूर्व निदेशक, जियूलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया ने अपने 2002 की खोजों के आधार पर बनाई थी, को भी दबा दिया गया। इसमें कहा गया था कि रामसेतु के निकट केका समुद्र में कम से कम 9000 वर्ष पूर्व रामसेतु मानवनिर्मित था और यह प्राकृतिक ढांचा नहीं है। बिना जी.एस.आई. से पुनः स्पष्टीकरण मांगे, या उनकी सलाह के बिना, केन्द्रीय मंत्री ने जल्दबाज़ी में सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दाखिल कर दी जो सुब्रसण्यम् स्वामी के पहले के दाखिल पेटीशन की पूरी तरह उपेक्षा थी। इसमें साक्ष्यों व अभिलेखों के संलग्नकों द्वारा कहा गया था कि रामसेतु मानव निर्मित है। पूर्व पुरातत्व विभाग के निदेशक एस.आर. राव ने सरकार के विचारों का खुलकर मखौल भी उड़ाया था। इस तरह से इस विषय पर किसी भी स्वतंत्र विमर्श को दबाकर न्यायालय की निर्णय प्रक्रिया को राजनीतिबाजों ने प्रदूषित करना शुरू कर दिया। खुदाई व 'ड्रेजिंग' करने वाली कई बड़ी लालायित कम्पनियाँ भी इस अराष्ट्रीय परियोजना के समर्थन में ही नहीं, उत्तरीं बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से तमिल टाइगर्स (एन.टी.टी.ई.) भी केरल के तटीय स्थलों पर आतंकवादी व

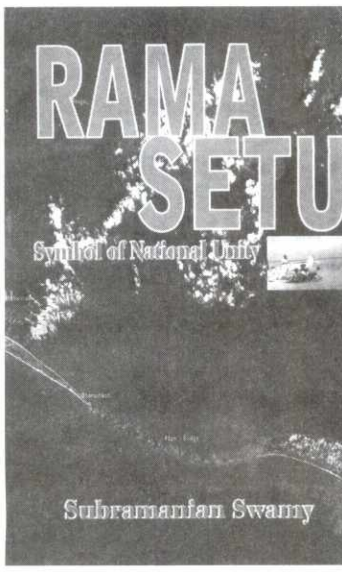

मादक द्रव्यों की तस्करी के अड्डे बनाने के सपने देखने लगे। इसलिए भी जनता सारी परियोजना को बंदलने की मांग कर रही थी। लेखक ने स्वयं–न्यायालयों द्वारा सरकार को जो चुनौती दी वह देशभर में एक व्यापक आन्दोलन बन गया। सुब्रह्ममण्यन स्वामी ने इस विषय पर शोधपूर्ण लेखकों की कृतियों के प्रति आभार प्रकट किया है जिनमें डा. एस. कल्याणरमन और बी. सुन्दरम व श्रीमती वी.एस.चंद्रलेखा प्रमुख हैं। उनकी अपनी पत्नी डा. रोक्साना एस. स्वामी जो सर्वोच्च न्यायालयों की अधिवक्ता है उन्होंने स्वयं इस ग्रंथ की पाण्डुलिपि और परिशिष्ट की विविध सामग्री व सूचियों को अत्यधिक श्रम से सत्यापित किया है और इसके लिए उनके लिए भी धन्यवाद किया गया है। 7 अध्यायों ने विभाजित इस ग्रंथ में रामसेतु की ऐतिहासिकता और, वह राष्ट्रीय धरोहर क्यों है? इसके साथ जुड़ी राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर भी परिचर्चा की गई है।

सच देखा जाए तो 2 जुलाई 2005 में डा. महमोहन सिंह ने खुद मदुराई जाकर सेतु समुद्म् शिप चैनल परियोजना, जिसमें रु. 2427 करोड़ व्यय होने थे, का उद्घाटन किया तभी से विवाद प्रारंभ हो गए थे। उन्होंने रामेश्वरम् छोड़कर मदुराई में यह उद्घाटन कार्यक्रम क्यों होने दिया इसके रहस्य पर आज भी परदा पड़ा हुआ है। भारत और श्रीलंका के बीच पाक स्टेट्स अत्यन्त उथला होने से जहा जों की आवाजाही असंभव है। भारत के पास अपनी सीमा के भीतर के समुद्र से होकर अबाध नौकानयन के भारतीय –पेनिनसुला' से घूमकर जाने के लिए कोई समुद्री मार्ग उपलब्ध है।

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org

आध्यात्मिक हास्य नाटिका

माननीय...

● डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

पात्र :– आत्मा, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार)

आत्मा: (मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार से) तुम चारों मेरी बात को ध्यान से सुनो।

सब : (एक साथ) कौन हैं आप?

आत्मा : तुम्हारा बाप। जन्म–जन्मान्तरों से तुम्हें पाल रहा हूँ और पूछ रहे हो, कौन हैं आप?

बुद्धि : सॉरी पापा! गलती हो गई, अज्ञानी हैं, हम और भुलक्कड़ भी।

आत्मा : सुनो ध्यान से, अभी कुछ पलों में आर्यवानप्रस्थ आश्रम में मेरा प्रवचन है। तुमने मेरी सहायता करनी है और इतनी तेजी और सावधानी से कि किसी को भी कानों नहीं लगनी चाहिए।

मनः सो कैसे?

आत्मा : जब मैं व्यास पीठ पर चढूँगा तो तुमने गहराई से अर्थात् हृदय की गहराई से शब्दों के पत्थर इस ढंग से उछालने हैं कि वे सीधे कानों गुजर कर सीधे मेरे मुँह में गिरें और मैं उनको चबाकर इस ढंग से उच्चारण करूँगा कि वे शब्द मेरे ही लगें।

चित्त : हम समझे नहीं।

अंहकार : मेरे पल्ले भी कुछ नहीं पड़ा।

आत्मा : बताता हूँ। ये जो चित्त है न, इसके पास शब्दों का भंडार जमा है पर इसका मालिक है, अंहकार। अंहकार चित्त से शब्दों को उठाकर मन को सौंपेगा, फिर मन विचार करके उन शब्दों को बुद्धि के सुपुर्द कर देगा। बुद्धि कोई उचित शब्द छाँटकर मेरी ओर फेंक देगी और मैं फौरन उस शब्द का उच्चारण कर दूँगा। इस प्रकार मेरा प्रवचन आगे बढ़ता जायेगा। पर किसी को पता नहीं चलना चाहिए कि इस प्रवचन में चार–चार महावीरों का योगदान है।

सब : ठीक है। हम तैयार हैं।

घोषणा

देवियो और सज्जनो! आज हमारे बीच सरस्वती के अवतार, वाणी विलास जी विराजमान हैं। मैं उनसे निवेदन करता हूँ कि वे देश की आजादी को ध्यान में रखते हुए अपने ओजस्वी विचार प्रकट करें।

आत्मा : (व्यास पीठ पर आकर, मंत्रोच्चारण के उपरान्त)

"माननीय.... (अन्तर्जगत में, बच्चो शब्द भेजो)

मन : ठीक है। (चित्त से) तेरे पास सम्बोधन के कितने शब्द हैं।

चित्त : तीन। गिरिजन, हरिजन और विद्वत्जन। कौन सा भेजूँ?

अंहकार : जो भी भेजना, मुझे पूछ कर भेजना।

चित्त : चुपकर। (बुद्धि से) दीदी, तीन शब्द हैं तीनों दे दूँ?

बुद्धि : नहीं गधे, दो शब्द रख लेते हैं। एक शब्द भेजते हैं। (आत्मा से) लो पापा जी!

आत्मा : माननीय गिरिजन!

श्रोता : (हंसते हुए) क्या बोल रहे हैं आप, हम सिटिजन हैं गिरिजन नहीं।

बुद्धि : (घबराकर) पापा, इस शब्द को छोडिये और दूसरे शब्दों का प्रयोग कीजिए– 'विद्वत्जन!

आत्मा : माननीय विद्वत्जन!

श्रोता : हाँ, इस बार ठीक प्रयोग किया है।

आत्मा : आज का दिन हमारे लिए बहुत खुशी का दिन है। आज के दिन हमने आज़ादी प्राप्त की थी। क्या आप बता सकते हैं हमें आजादी प्राप्त किए हुए कितने साल हो गए हैं और यह आज़ादी का कौन सा साल है। आपको नहीं आता, लो मैं बताता हूँ, यह हमारी आजादी...... (चारों, बच्चों से जल्दी बताओ)

बुद्धि : (चित्त से) तेरे पास गिनती के कितने शब्द हैं?

चित्त : तीन।

मन : कौन–कौन से?

चित्त : तिरेसठवाँ, चौसठवाँ और पैंसठवाँ।

अहंकार : जल्दी फैसला करो, कौन सही है?

बुद्धि : मैं कन्फ्यूज्ड हूँ। तीनों बोल देती हूँ। पापा जी, खुद ही फैसला कर लेंगे। (पापाजी, तिरेसठवाँ, चौसठवाँ और पैंसठवाँ)

आत्मा : देशवासियो। यह हमारी आजादी का तिरेसठवाँ, चौसठवाँ और पैंसठवाँ साल है।

श्रोता : इन्हें व्यासपीठ पर किसने बैठा दिया। इनके तो सारे तार हिले हुए हैं।

आत्मा : (अन्तर्जगत में बड़बड़ाते हुए अपने बच्चों से) गधो! तुमने मेरी बेइज्जती करा दी।

बुद्धि : (घबराते हुए। पापा जी, माफ कर दीजिए। एक मौका ओर दे दीजिए। इस बार गड़बड़ी नहीं होगी।

आत्मा : ठीक है, आगे गलती मत करना।)

'फिर श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए' प्यारे श्रोताओ! चाहे हमारे आजादी का तिरेसठवाँ, चौसठवाँ या पैंसठवाँ साल हो, कोई फर्क नहीं पड़ता। फर्क तक पड़ता है जब हम स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धा–सुमन समर्पित नहीं करते हैं। देश की आजादी में आर्यसमाज का महान योगदान रहा है। आर्य समाज के संस्थापक......... (बच्चो, जल्दी शब्द उछालो)

बुद्धि : (चित्त से) बोल, तेरे स्टोर में कितने नाम है?

चित्त : चार।

अंहकार : कौन–कौन से?

चित्त : दिव्यानन्द, दयानन्द, देवानन्द और विरजानन्द।

मन : कौन सा दूँ, क्या देवानन्द दूँ?

बुद्धि : नहीं, गधे, वह पिक्चर के हीरो का नाम है?

अहंकार : मुझे तो स्वामी दयानन्द भी ठीक लगता है।

मन : वे तो प्रज्ञाचक्षु थे।

अहंकारः फिर तो दिव्यानन्द पक्का। मेरा तीर कभी खाली नहीं जाता।

बुद्धिः तुम कहते हो तो चलो ठीक है। (आत्मा से) पापा जी, दिव्यानन्द जी बोल दीजिए।

आत्मा : (श्रोताओ) मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आर्य समाज के संस्थापक दिव्यानन्द जी ने............

श्रोता : (चिल्लाकर) कहाँ से पकड़ लाए इस भोले बाबा को। अभी नीचे उतारो, व्यास पीठ से।

आत्मा : श्रोताओ! जरा मेरी बात को समझने की कोशिश कीजिए, मैंने दयानन्द जी के लिए दिव्यानन्द का प्रयोग इसलिए किया है कि वे दिव्य आनन्द से परिपूर्ण थे।

श्रोता : हम आपका स्पष्टीकरण नहीं चाहते हैं। आप फौरन व्यास पीठ से नीचे उतर जाइये।

घर का कक्ष

आत्मा : (अपने बच्चों से क्रोध की मुद्रा में) गधो! जानते हो, तुम्हारे कारण मेरी कितनी बेइज्जती हुई है।

मन : (आत्मा से) सारा दोष अंहकार का है, घमंडी नम्बर एक। अपने आप तो कुछ करना–धरता नहीं और कुछ बोल दो तो मुँह फुलाकर बैठ जाता है।

अहंकार : ज्यादा बक–बक मत कर। शब्दों को छाँटना तो आता नहीं और दोष दे रहा है मुझको।

बुद्धि : तो क्या यह चित्त की गलती थी?

चित्त : मेरा काम तो शब्दों को या घटनाओं को स्टोर करना है, सलेक्ट करना मन का काम है। सारा दोष मन का है।

मन : मुझे क्यों दोषी ठहराते हो? मुझे जो शब्द पसन्द आए, मैंने बुद्धि को पकड़ा दिये। अब यह तो बुद्धि को देखना था कि कौन सा शब्द पापा को पकड़ाना है।

बुद्धि : मेरी भी एक सीमा है। मुझे जो शब्द मिले, मैंने उन्हीं में छाँट कर पापा जी को पकड़ा दिए। मैं नए शब्द तो गढ़ नहीं सकती।

आत्मा : बन्द करो यह बहस। अब तुम्हारी बहस से मेरा सम्मान तो लौट नहीं सकता।

सब : (एक साथ) पापा, एक बात कहें।

आत्मा : कहो।

सब : आप नाराज तो नहीं होंगे?

आत्मा : (सोचकर) अच्छा, नहीं।

सब : सारा दोष आपका है।

आत्मा : कैसे?

मन : हम आपकी संतान है। यदि आपने हमें यह समय पर सुनिश्चित किया होता तो ऐसी नौबत न आती।

बुद्धि : आप क्यों भूल गए कि हम जड़ हैं और आप चेतन। आपने सोचा भी नहीं कि किसको काम सौंप रहे हैं?

आत्मा : हाँ, बच्चो, यह मेरी ग़लती थी कि मैं अपनी शक्ति और चेतना को भुलाकर तुम्हें ही सब कुछ समझ बैठा। आज तुम्हारे माध्यम से मुझे यह सबक मिला है कि जो आत्मा अपनी शक्ति और चेतना को भुला कर मन, बुद्धि आदि जड़ पदार्थों को सब कुछ समझ बैठता है उसका अन्त हमेशा बुरा होता है।

सब : पापा, हमें क्षमा करना।

आत्मा : 'यशस्वी भव'।

230 आर्यवानप्रस्थ आश्रम,
ज्वालापुर, हरिद्वार मो. 09639149995

☞ पृष्ठ 04 का शेष

यह लोकैषणा नहीं ...

कितने सार्थक हैं।

उसके बाद पुनः उसी स्वामी जी का फोन आया। उन्होंने कहा कि मुझे डॉ. कपिलदेव द्विवेदी जैसे विद्वान ब्रह्मर्षि शब्द से संबोधित कर पत्र लिखते थे। इसलिए मैं इस विशेषण का प्रयोग करता हूं, उसमें अनुचित क्या है?

उक्त कार्यक्रम में पधारने वाले विशिष्ट लोगों की सूचि में श्री प्रकाश जी आर्य (दिल्ली) का नाम भी था। मैंने तुरन्त श्री प्रकाश जी को इस सम्बन्ध में फोन से सूचित किया और कहा कि अगर वे इस कार्यक्रम में सम्मिलित होते हैं तो इन फर्जी विशेषणों के बारे में अवश्य अनुसंधान करें।

आर्य समाज के हितेच्छुओं को सावधान रहने की आवश्यकता है। अगर हम असावधान रहे तो हमारे यहां भी पाखंड, अंधविश्वास, गुरुडम आदि दूषण पैदा हो सकते हैं।

8–17 टाउनशिप,
पो .नर्मदानगर, जि. भरुच,
गुजरात–312015

thearyasamaj.org

हैदराबाद के आर्यों की साधना और संघर्ष

● श्री प्रकाशवीर शास्त्री

आर्यसमाज का जन्म ही यों तो क्रान्ति की घड़ियों में हुआ। 1857 की क्रान्ति होकर चुकी थी, चारों ओर देश में सन्नाटा था। अंग्रेजों का दमनचक्र भी अपनी पराकाष्ठा पर था। जुबानों पर ताले डाल दिए गए थे और कलमें रगड़ दी गई थीं। लोग समझने लगे थे– अब कई दशाब्दियों तक भी स्वाधीनता की बात करनेवाला कोई नहीं होगा। ऐसी विषम स्थिति में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की नींव रखी। पंजाब, सिन्ध, सीमाप्रान्त, उत्तर प्रदेश और बिहार में आर्यसमाज की शाखाएँ खुलने लगीं। पर सुदूर दक्षिण में वह हवा कुछ देर से पहुँची। यातायात के साधन भी आज की तरह विकसित नहीं थे और सुधार की जिस योजना को लेकर आर्यसमाज उठा, उसका अपनों ने परायों से भी ज़्यादा विरोध किया।

हैदराबाद की रियासत दक्षिण में ही नहीं, पूरे भारत में अपने वैभव के लिए प्रसिद्ध थी। सोना–चाँदी, हीरे–जवाहरात जितने यहाँ थे उतने किसी रियासत में नहीं थे। पर हैदराबाद का नवाब और उसके दाएँ–बाएँ लगा फ़िरक़ापरस्तों का क़ाफ़िला अपने कठमुल्लापन के लिए भी हिन्दुस्तान में उतना ही बदनाम था। अल्पसंख्यकों विशेषकर हिन्दुओं पर जो जुल्म उन दिनों निज़ाम की हुकूमत में ढाए जा रहे थे उन्हें याद करके आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जिन जिन पर वह बीती होगी उनका तो कहना ही क्या! इस पुस्तक के लेखक पंडित नरेन्द्र जी की तो सारी जवानी ही निज़ाम की जेलों में निकल गई। कब माँ मरी, कब पिता मरे, जब इसी का पता नहीं तो दूसरे रिश्तेदारों की कौन कहे! दो बार तो मुसलमान उन्हें मरा हुआ समझकर छोड़ गए। पर 'जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय'। भगवान् ने तो और भी बड़ी सेवाएँ उनसे लेनी थीं। हैदराबाद में आर्यसमाज का इतिवृत्त लिखने के लिए उनसे अधिक और कोई उपयुक्त व्यक्ति नहीं हो सकता था। आधे से अधिक इतिहास के तो वह स्वयं नायक हैं। इस पुस्तक के लेखक क्योंकि वह स्वयं हैं इसलिए अपने से सम्बन्धित घटनाओं को न लिखकर उन्होंने पाठकों के साथ न्याय नहीं किया। इससे तो अच्छा होता कोई और ही इसे लिखता।

हैदराबाद के आर्य–सत्याग्रह को भला कौन भूल सकता है? मुझे स्वयं पहले इसी सत्याग्रह में सात मास कारावास भुगतना पड़ा था। निज़ाम के साथ जब समझौते की बात चलने लगी तो चौदह शर्तें आर्य समाज की ओर से रखी गईं। यदि निज़ाम–सरकार उन्हें मान लेती तो सत्याग्रह बन्द हो जाता। उनमें से तेरह शर्तें तो निज़ाम ने मान लीं पर एक पर वह अड़ गया और सत्याग्रह उसी में एक महीना और खिंच गया। वह चौहदवीं शर्त थी–हैदराबाद के कालापानी मनानूर में वर्षों से बन्द युवक आर्य–नेता पंडित नरेन्द्र को रिहा करना। निज़ाम को भय था वह व्यक्ति बाहर आते ही पता नहीं फिर क्या तूफ़ान बरपा करेगा! इसी से अनुमान लगाया जा सकता है पुस्तक के लेखक का हैदराबाद में आर्यसमाज के आन्दोलन से सम्बन्ध ही केवल नहीं रहा, उसके प्रमुख संचालकों में से वह एक हैं।

हैदराबाद के इतिहास में उन तीन युवकों को भी शायद आसानी से न भूला जा सके जिन्होंने निज़ाम–हैदराबाद पर बम फेंकने के लिए शोलापुर में निशाना साधने की छः महीने तक ट्रेनिंग ली थी। आखिर एक दिन वह आ ही गया जब उन्हें प्रशिक्षण का परिणाम देखना था। निज़ाम साहब हर रोज़ शाम को अपनी माँ की क़ब्र पर फूल चढ़ाने कब्रिस्तान जाते थे। उनके जाने और आने के समय सड़कें बन्द हो जाती थीं। कोई सवारी तो क्या, सड़कों पर पैदल चलनेवाले भी रोक दिए जाते थे। इन युवकों ने इसी अवसर को अपनी लक्ष्यपूर्ति के लिए सबसे उपयुक्त माना। निज़ाम के महल से क़ब्रिस्तान जाने के रास्ते में तीन ऐसे मोड़ आते थे जहाँ गाड़ी को बहुत धीरे करना होता था। ये तीनों बलिदानी युवक उन्हीं मोड़ों पर एक–एक करके भीड़ में खड़े हो गए। तीनों के एक हाथ में बम और दूसरे में ज़हर की शीशी थी। निश्चय यह हुआ जिसके बम से निज़ाम मरे वह तत्काल ज़हर पी ले जिससे उसके रहस्य भी उसके साथ चले जाएँ। सबसे पहले मोड़ पर जिस युवक की ड्यूटी लगी उसका नाम था नारायण राव। निज़ाम की गाड़ी मोड़ पर आते ही नारायण राव ने निशाना साधकर बम मारा पर निज़ाम उससे बाल–बाल बच गए। गाड़ी की डिग्गी तो उसमें उड़ गई, सड़क में भी गहरा गड्ढा हो गया पर निज़ाम बच गए। निश्चय उन युवकों का यह था– यदि पहले मोड़ से निज़ाम बच जाएँ तो दूसरे मोड़ पर खड़ा युवक अपना काम करेगा और दूसरे से बच निकलें तो तीसरा बम फैंकेगा। यह नौबत ही न आई और निज़ाम साहब बीच में से ही घर लौट आए। नारायण राव ने भी, जब निज़ाम नहीं मरे तो जहर पीना व्यर्थ समझा। उसे पकड़कर जेल भेजा गया और सारे रहस्य जानने के लिए फाँसी के अतिरिक्त सभी यातनाएं उसे दी गईं। पर बहादुर नारायण राव अपने पर ही अन्त तक सारा दोष लेता रहा। हैदराबाद में फाँसी की सज़ा तो उन दिनों थी नहीं, इसलिए नारायण राव को आजीवन कारावास की कठोर सज़ा दी गई। हैदराबाद में हुई पुलिस–कार्यवाही के बाद सरदार पटेल को जब यह बात पता लगी तो सबसे पहले उन्होंने नारायण राव को ही छोड़ने का आदेश दिया। नारायण राव को छोड़ा ही नहीं, सरदार ने उसे दिल्ली भी बुलवाया और पूछा– तुमने निज़ाम पर बम क्यों फेंका था? क्या तुम्हें अपना जीवन प्यारा नहीं था? नारायण राव ने अपने सीधे–साधे शब्दों में कहा– जो ज़ालिम हज़ारों माँ–बहनों और बच्चों को मरवा रहा था उसे मारकर मैं यदि मर भी जाता तो कितनों को जीवन मिलता? सरदार हँसे और अपनी कुर्सी से उठकर नारायण राव की कमर थपथपाते हुए बोले – शाबाश! बहुत अच्छा! हमने हिन्दुस्तान को आज़ाद किया, और तुमने हैदराबाद को आज़ाद किया, जाओ खुश रहो! नारायण राव आज भी सौभाग्य से जीवित हैं। न किसी ने उसे राजनैतिक पेन्शन दी और न यह पूछा तू कहाँ और कैसे रहता है? पीछे उसे तपेदिक हो गई, बिना पैसे के इलाज की व्यवस्था न हो सकी। तब भी पंडित नरेन्द्र ने ही उसे सहारा दिया।

जैसा मैं ऊपर लिख चुका हूँ, आर्यसमाज दक्षिण में देर से ज़रूर पहुँचा पर इसके सिद्धान्तों और आदर्शों को जो निखार वहाँ मिला वह अन्यत्र न मिल सका। दूसरे राज्यों में तो हिन्दू–समाज की बुराई दूर करते–करते उलटे आर्यसमाज में ही उसकी बुराईयाँ प्रवेश कर गईं। जन्म के आधार पर जात–पाँत का परित्याग और शुद्धि की हवा भी जो वहाँ चली वह उत्तर में स्वामी श्रद्धानन्द जी के बाद ठंडी–सी पड़ गई। हैदराबाद में तो एक समय था, जब जन्म के आधार पर स्वजाति में विवाह करना अपराध ही केवल नहीं था अपितु आर्यसमाज की सदस्यता से भी उसे हाथ धोना पड़ता था। एक–आध तो प्रान्तीय स्तर के नेताओं के साथ भी यह घटना घटी। यही कारण था कि आर्यसमाज हिन्दू–समाज की दुर्बलताओं से हैदराबाद में जमकर लोहा लेता रहा।

हिन्दुओं की कितनी दयनीय दशा वहाँ हो गई थी, आज तो उसे याद करके कष्ट होता है। वेश–भूषा, भाषा, रीति–रिवाज सब उनसे छीन लिए गए थे। आर्यसमाज के सार्वजनिक कार्यक्रमों में वहाँ भीड़ तो बहुत होती ही थी, श्रोताओं की अच्छी संख्या में उन लोगों की भी उपस्थिति रहती थी जो बाहर को चोटी की तरह लटकते हुए फुँदनेवाली लाल तुर्की टोपी लगाते थे। एक बार तो मैं अपना आश्चर्य न रोक सका और पूछ ही बैठा– क्या बात है, मुसलमान यहाँ बहुत आर्यसमाज के कार्यक्रमों में रूचि लेते हैं? तब एक अधिकारी ने बताया– ये हिन्दू ही हैं। रियासत के रिवाज में आकर मुस्लिम टोपी लगाते हैं। हिन्दू सरकारी कर्मचारियों पर तो अनिवार्यता थी ही यह टोपी लगाने की। भाषा के बारे में भी उर्दू का बोलबाला था। स्कूलों में, कॉलेजों में, कचहरी और सरकारी दफ्तरों में उर्दू ही उर्दू छाई हुई थी। हिन्दी आर्यसमाज के विद्यालयों, कार्यक्रमों और समाज के रजिस्टरों में ज़रूर सिसक रही थी, पर उसके प्रचार और प्रसार पर प्रतिबन्ध था। ऐसी ही स्थिति रीति–रिवाजों की हो गई थी। ईद, मुहर्रम और कब्रों पर पर चादर चढ़ाने में हिन्दू भी सवाब मानने लगे थे। आर्यसमाज ने विजयदशमी और होली को जुलूस निकालकर एक नई दिशा हिन्दू–समाज को वहाँ दी। चार–चार, पाँच–पाँच मील तक लाखों की संख्या में सशस्त्र हिन्दू लोग जब उमंगों में जय–जयकार करते हुए निकलते थे तो हैदराबाद हिल जाता था। आज भी यद्यपि वह परम्परा जारी है पर समय के प्रवाह ने उसमें परिवर्तन कर दिया है।

स्वाधीनता की लहर भी हैदराबाद में आर्यसमाज के द्वारा ही पहलेपहल चली। सामाजिक और राजनैतिक, दोनों तरह की क्रान्ति में आर्यसमाज अगुआ बना हुआ था। गांधी जी ने आर्यसमाज के उस ऐतिहासिक सत्याग्रह की समाप्ति पर कहा था– इतना अनुशासित और ज्वार की तरह उमड़ता हुआ सत्याग्रह मैंने पहली बार जीवन में देखा है। सरदार पटेल ने तो हैदराबाद की विजय पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कह ही दिया– आर्यसमाज ने यहाँ पहले से यदि भूमि तैयार न की होती तो तीन दिन में पुलिस–कार्यवाही सफल होनी मुश्किल थी। आज तो सहसा उस परिस्थिति की कल्पना भी करना कठिन है।

इस पुस्तक को लिखकर पंडित नरेन्द्र जी ने बहुत–सी बिखरी हुई उन स्मृतियों को इकट्ठा कर दिया है जो देर होने से विस्मृति के गर्त में दबती चली जातीं। वैसे अभी और भी बहुत इस पर लिखा जा सकता है। कोई प्रतिभाशाली युवक इसी विषय पर शोध–ग्रन्थ भी लिखे तो और अच्छा रहे। पुरानी पीढ़ी के पंडित नरेन्द्र जी जैसे जो दो–चार व्यक्ति अभी शेष हैं, वह इसमें अच्छे सहायक रह सकते हैं।

पंडित नरेन्द्र जी की पुस्तक की भूमिका से साभार

thearyasamaj.org

महर्षि का वेद-भाष्य तर्क व विज्ञान पर आधारित है

● खुशहाल चन्द आर्य

यह लेख मैंने आदरणीय डॉ. सोमदेव जी शास्त्री द्वारा लिखित "यजुर्वेद सन्देश" पुस्तिका से उद्धृत किया है। डॉ. साहब आर्य जगत के एक उच्च कोटि के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान हैं। सभी आर्यजन इनको श्रद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि डॉ. साहब मेरे परिवार से विशेष रूप से जुडे हुए हैं। मेरे परिवार वालों ने मेरे स्व. पिता गोविन्द राम आर्य (प्रधान जी) की पुण्य स्मृति में "आदर्श आर्य प्रवर" शीर्षक की पुस्तक छपवाई थी। उसका सम्पादन डॉ. साहब ने ही किया था, जिसकी सभी लोगों ने बड़ी प्रशंसा की थी। इसी पुस्तक के उदघाटन के समय सोमदेव जी मेरे गाँव देवराला (हरियाणा) भी गए थे। मेरे पूरे परिवार से इनका घनिष्ठ सम्बन्ध है। कलकत्ता में मेरे घर को भी इन्होंने कई बार पवित्र किया है। इस प्रकार ये मेरे पूरे परिवार से पूर्ण परिचित हैं।

इनकी पुस्तक "यजुर्वेद सन्देश" को पढ़ने से उनकी प्रकाण्ड विद्वत्ता का परिचय मिल जाता है। इस पुस्तक को पढ़ने से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि महर्षि देव दयानन्द का वेद-भाष्य, अन्य भाष्यकारों से कहीं अधिक सार्थक और सही है जो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। पहले के भाष्यकार वेदों में हिंसा, इतिहास तथा केवल कर्म काण्ड को ही मानते थे। परन्तु महर्षि ने वेदों के सही अर्थ लगाकर यह बतला दिया कि वेदों में कहीं पर भी हिंसा नहीं है और न ही इनमें इतिहास है और वेद केवल कर्म काण्ड के ही नहीं बल्कि सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं। महर्षि ने यह सिद्ध करके मानव-मात्र का बड़ा उपकार व कल्याण किया है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने भी जो लेख लिखा है, इसे पढ़ कर मैं आशा करता हूँ कि सुधी पाठक गण वेदों के सही स्वरूप को समझ पाएँगे। यही मेरी उपलब्धि होगी। लेख इस भाँति है-

मध्यकालीन वेद भाष्यकारः-मध्यकाल में अनेक वेद भाष्यकार हुए हैं जिन्होंने वेदों का या वेद के कुछ हिस्सों का भाष्य किया है। विक्रम संवत 687 में स्कन्द स्वामी ने ऋग्वेद के प्रथम अष्टक के 4-5 सूक्तों का आधियाज्ञिक प्रक्रिया (कर्मकाण्ड परक) वेद भाष्य किया। स्कन्द स्वामी के समय ही उद्‌गीथ हुए हैं, उन्होंने ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पाँचवें सूक्त के चौथे मन्त्र से 86 सूक्त थे 6 मन्त्र तक वेदभाष्य किया। यह भाष्य भी कर्म काण्ड परक ही है। विक्रम संवत् की 12वीं शताब्दी में बेंकट माधव ने ऋग्वेद का आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अनुसार भाष्य किया। विक्रम संवत् की 13वीं शताब्दी में आत्मानन्द ने ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्त (ऋग्वेद के पहले मण्डल के 164 सूक्त) का आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार भाष्य किया। आनन्द तीर्थ ने (विक्रम संवत् 1255-1335) ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीस सूक्तों का आध्यात्मिक भाष्य किया। सायणाचार्य (विक्रम संवत् 1372-1442) ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का (बाल खिल्य सूक्तों को छोड़कर) आधियाज्ञिक प्रक्रिया परक भाष्य किया। कहीं-कहीं आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार अर्थ भी किए हैं।

उव्वट (विक्रम संवत् 1100) ने यजुर्वेद का भाष्य किया जो कर्म काण्ड परक भाष्य है। महीधर (विक्रम संवत्1645) ने भी यजुर्वेद का भाष्य याज्ञिक प्रक्रियानुसार किया। इन दोनों भाष्यकारों ने यजुर्वेद के प्रत्येक मन्त्र को यज्ञ में होने वाली प्रक्रियाओं के साथ जोड़ा। गोमेध, अश्वमेधादि शब्दों का अनर्थ करके पशु हिंसा से जघन्य कृत्य को यजुर्वेद के मन्त्रों द्वारा प्रतिपादित किया। यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का भाष्य भट्ट भास्कर ने विक्रम संवत् 1100 में किया तथा इसी शाखा का सायण ने भी भाष्य किया।

सामवेद का भाष्य भरत स्वामी ने विक्रम संवत् 1360 के लगभग किया, कर्मकाण्ड परक अर्थों के साथ-साथ कहीं-कहीं अध्यात्म परक अर्थ भी किए। माधव जो विक्रम की सातवीं शताब्दी में हुए, उन्होंने भी सामवेद का भाष्य किया। आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अतिरिक कुछ मन्त्रों का आध्यात्मिक अर्थ भी किया। अपने भाष्य में ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रमाण भी उद्‌धृत कियें। भरत स्वामी और माधव के अतिरिक्त सायण ने भी सामवेद का भाष्य किया। अथर्ववेद का मध्यकालीन आचार्यों में केवल सायण ने ही भाष्य किया। इसमें भी उन्होंने मन्त्र-तन्त्र, जादू-टोना कृत्य, अभिचार (हिंसा) आदि कृत्यों का वर्णन भाष्य करते हुए किया।

मध्यकालीन सभी आचार्यों ने अपने भाष्यों में मुख्य रूप से याज्ञिक कर्म काण्ड का वर्णन किया। इसमें भी पशुहिंसा, मांसभक्षण, जादू-टोना, मारण-उच्चाटन, अग्नि-इन्द्रादि देवताओं का सशरीर स्वर्ग में निवास, उनका परिवार सहित सुख, ऐश्वर्यों को भोगना, यज्ञ की हवि (आहुति) का भक्षण करने के लिए स्वर्ग से अदृश्य रूप में यज्ञ स्थल पर आना और यजमान को आशीर्वाद देना, मरने के बाद यजमान को स्वर्ग में ले जाना आदि अनेक मिथ्या विचारधारा वेद के नाम पर प्रचलित करने का कार्य किया। जिससे सामान्य जनता वेदों से विमुख हो गई। वेद केवल व्यक्ति विशेष (ब्राह्मणों) के लिए ही हैं जो याज्ञिक कर्मकाण्ड कराते हैं। इसी प्रकार वेद केवल याज्ञिक कर्मकाण्ड के लिए ही उपयोगी हैं। यह प्रसिद्ध कर दिया गया। इस प्रकार जन सामान्य की वेद से रूचि हट गई। वेदकथा, वेदप्रवचन प्रचारादि के स्थान पर भागवत, गीता, उपनिषद् और सत्यनारायण आदि की कथा तथा प्रवचनादि हो गए।

मध्यकालीन सभी आचार्यों ने अपने भाष्यों में मुख्य रूप से याज्ञिक कर्म काण्ड का वर्णन किया। इसमें भी पशुहिंसा, मांसभक्षण, जादू-टोना, मारण-उच्चाटन, अग्नि-इन्द्रादि देवताओं का सशरीर स्वर्ग में निवास, उनका परिवार सहित सुख, ऐश्वर्यों को भोगना, यज्ञ की हवि (आहुति) का भक्षण करने के लिए स्वर्ग से अदृश्य रूप में यज्ञ स्थल पर आना और यजमान को आशीर्वाद देना, मरने के बाद यजमान को स्वर्ग में ले जाना आदि अनेक मिथ्या विचारधारा वेद के नाम पर प्रचलित करने का कार्य किया।

पाश्चात्य विद्वानः- आधुनिक युग (18वीं 19वीं शताब्दी) में वेदों पर भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों के विद्वानों ने भी कार्य किया। सन् 1850 में डॉ. एच-एच विल्सन ने सायण भाष्य के आधार पर ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया। प्रो. मैक्समूलर ने रूद्र, मारूत्, वायु आदि देवताओं के सूक्तों का अंग्रेजी में अनुवाद किया तथा वेद की संहिताओं के तथा सायण भाष्य के सम्पादन का भी परिश्रमसाध्य कार्य किया। जर्मन भाषा में ऋग्वेद का पद्यानुवाद जर्मन विद्वान ग्रासमान ने सन् 1876-1877 में किया। इसी प्रकार जर्मन विद्वान ए. लुडविग, एच. ओल्डनवर्ग ने ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद किया। आर. टी. एच ग्रिफिथ ने (सन् 1881-1898) चारों वेदों का अंग्रेजी मे पद्यानुवाद किया। लांगल्वा नामक फ्रांसीसी विद्वान ने फ्रेंच भाषा में ऋग्वेद का अनुवाद किया। डॉ. कीथ ने तैत्तिरीय संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद किया। थियोडोर बेन्फे ने (सन् 1848 में) सामवेद (कौथुम शाखा) का जर्मन अनुवाद किया। अथर्ववेद (शौनक संहिता) का W.H.ने तथा अथर्ववेद (पैप्पलाद शाखा) का ब्लूम फील्ड ने अंग्रेजी अनुवाद करके सन् 1901 में प्रकाशित किया। इस प्रकार विदेशों में वेदों पर विगत दो सौ वर्षों में बहुत कार्य हुआ।

महर्षि दयानन्दः- महर्षि दयानन्द ने बहुत थोड़े समय में, वेदों का प्रचार करना, ईश्वर, धर्म और वेदों के नाम पर प्रचलित पाखण्ड और अन्धविश्वास का खण्डन, शंका समाधान करना, शास्त्रार्थ करना, स्वार्थी लोगों द्वारा उपस्थित विघ्न बाधाओं को सहन करना, दिन-रात प्रचार-यात्रा करना, छोटे-बड़े 43 ग्रन्थों को लिखना अपने आप में एक अद्‌भुत कार्य उन्होंने किया। स्वार्थी और मूर्ख लोगों ने उन पर ईंट-पत्थर फैंके, खाने में विष मिलाया, कुटिया में आग लगाई, ध्यान में बैठे हुए को नदी में फैंका आदि दुष्कृत्य किये किन्तु गुरु भक्त एवं प्रभु विश्वासी देव दयानन्द अपने लक्ष्य से कभी विचलित नहीं हुए और गुरु को दिया वचन उन्होंने आजीवन निभाया।

मध्यकालीन आचार्यों ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुए उव्वट और महीधर ने गोमेध, अश्वमेध नरमेधादि शब्दों को लेकर गाय, घोड़ा, नर आदि की हिंसा का विस्तार से वर्णन किया। यजुर्वेद के छठे अध्याय के 7 से 22वें मंत्र तक पशु को बाँधना, देवता के लिए उसका वध करना, आहुति देने का भयानक चित्रण किया है। साथ ही यह भी प्रचलित कर दिया कि यज्ञ के लिए की गई, हिंसा नहीं होती। ऐसा कुकृत्य वेदों के साथ किया गया, जिसे पढ़कर विवेकशील व्यक्ति वेदों से विमुख हो गए। महर्षि दयानन्द ने वेदों के प्रमाण देकर यज्ञों में हिंसा का घोर विरोध किया। उन्होंने यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में "पशुन पाहि" पशुओं की रक्षा करने का उपदेश दिया। गौ को "अघन्या" अर्थात् हिंसा के अयोग्य बताया और गोमेध का अर्थ गाय की हिंसा नहीं, अपितु इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना है, अश्वमेध का अर्थ घोड़े को मारना नहीं अपितु प्रजा का पालन करना है। मृतक शरीर अर्थात् शव का अन्त्येष्टि संस्कार को नरमेध बताया। साथ ही यह भी बताया कि इनकी हिंसा करने वाले को सीसे की गोली से मार देना चाहिए। वेदों के नाम पर पशु हिंसा के कलंक को समाप्त करने का अद्‌भुत कार्य महर्षि ने अपने वेद-भाष्य के द्वारा किया। साथ ही वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बतलाकर वेदों के महत्त्व को बढ़ाया और वेदों को केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं रखा।

180 महात्मा गान्धी रोड
(दो तल्ला) कोलकात्ता-700007

hearyasamaj.org

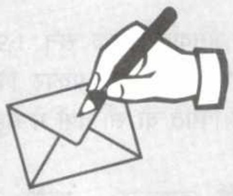

पत्र/कविता

भारत का राष्ट्रीय ग्रंथ वेद हो

मानव सभ्यता का सर्वोत्कृष्ट और प्राचीनतम साहित्य–वेद जिसे 'देव–काव्य' भी कहा जाता है, को ही भारत का राष्ट्रीय ग्रंथ घोषित किया जाना चाहिये न कि वेद विरोधी श्लाकों एवं विरोधाभासी विचारों से भरपूर अर्वाचीन काल्पनिक पुस्तक गीता को (12.53).

सर्वप्रथम सत्तर श्लोकों, फिर 745 श्लोकों, फिर आज 700 श्लोकों में बढ़ती–घटती रही गीता में कुछ अच्छे संदेश भी हैं, फिर भी न तो इसे अप्रक्षिप्त विशुद्ध मनुस्मृति की तरह वैदिक साहित्य माना जा सकता है और न वेद जैसे अगाध ज्ञान–विज्ञान के सागर के रहते हुए गीता को राष्ट्रीय पद पर प्रतिष्ठापित किया जा सकता है। वेद के समाने महाभारत के प्रक्षिप्त–भाग गीता को राष्ट्रीय–ग्रंथ घोषित करना वेद का ऐतिहासिक–अक्षम्य अपमान होगा। वेद के भारी भरकम शरीर को देखकर इसे राष्ट्रीय–कुर्सी पर बैठाने से हिचकिचाहट हो तो अप्रक्षिप्त वाल्मीकि रामायण को या फिर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त रचित विश्वविख्यात पुस्तक भारत भारती को ही राष्ट्रीय ग्रंथ बनाया जाना चाहिये किंतु योगेश्वर श्री कृष्ण को पूर्ण ब्रह्म परमात्मा बताने हेतु सत्य की चासनी में झूठी बातों को परोसी गयी बौद्धकालीन कृति–गीता को कभी नहीं।

पं. आर्य प्रहलाद गिरि
मुख्य पुजारी, निंगेश्वर मठ, निंगा
आसनसोल – 713370

****

नहीं बचेगा अत्याचारी

सन्तों को लक्षण सुनो, आज लगाकर ध्यान।
ईश भक्त, धर्मात्मा, वेदों के विद्वान।।
वेदों के विद्वान, सदाचारी, गृहत्यागी।
धैर्यवान, विनम्र, परोपकारी, वैरागी।।
सादा जीवन उच्च–विचारों के जो स्वामी।
वेदों का उपदेश करें, वे सन्त हैं नामी।।

जगत् गुरु दयानन्द थे, ईश्वर भक्त महान।
दयासिन्धु धर्मात्मा, थे वैदिक विद्वान।।
थे वैदिक विद्वान, ब्रह्मचारी, तपधारी।
दुखियों के हमदर्द, सदाचारी, उपकारी।।
किया घोर विष पान, भयंकर कष्ट उठाया।
किया वेद प्रचार, सकल संसार जगाया।।

दयानन्द ऋषिराज का, जग पर है अहसान।
दोष लगाता था उन्हें रामपाल शैतान।।
रामपाल शैतान, स्वयं बनता था ईश्वर।
करता था उत्पात, रात–दिन कामी पामर।।
बरवाला में किलानुमा, आश्रम बनाया।
उस पापी ने बड़ा–जुल्म प्रजा पर ढाया।।

उसके कुकर्म देखकर, जागे आर्य कुमार।
पोल खोल दी दुष्ट की किया वेद प्रचार।।
किया वेद प्रचार, नहीं योद्धा दहलाए।
आचार्य बलदेव–तपस्वी आगे आए।।
किया गजब का काम, चलाया फिर आन्दोलन।
बंद करो पाखंड दहाड़े मिल आर्य जन।।

रामपाल शैतान ने, गुण्डे लिए बुलाय।
आर्यजन थे निहत्थे, गोली दी चलवाय।।
गोली दी चलवाय, नहीं पापी गर्माया।
हुआ दम्भ में चूर, न ईश्वर का भय खाया।।
दो थे आर्य वीर, एक थी देवी प्यारी।
तीनों हुए शहीद, सुनो अब सब नर–नारी

कत्ल केस में, फँस गया, रामपाल मक्कार।
जाता था ना कोर्ट में , मित्रो! करो विचार।।
मित्रो! करो विचार, अजब है प्रभु की माया।
इस पापी का पाप, देखलो सम्मुख आया।।
देश द्रोह में फँसा, हुई पापी की ख्वारी।
''नन्दलाल'' कह, नहीं बचेगा अत्याचारी।।

पं.नन्दलाल निर्भय
ग्राम पत्रालय बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष क्रमांक– 9813845774

एक ऐसी यात्रा जिसमें प्रत्येक श्वास परामार्थ के लिए

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जीवन एक ऐसी यात्रा है जिसमें प्रत्येक क्षण प्रत्येक श्वांस परमार्थ के लिए है। न स्वास्थ्य की चिंता न खान पान की चिंता, न नींद और विश्राम की चिंता। चिंता केवल प्राणी मात्र के कल्याण की, देश की दशा व दिशा सुधारने की, सत्य को स्थापित करने की और सबकी उन्नति की। गुरुवर दयानन्द अद्वितीय प्रतिभा लिए थे। विद्वान्, गुणी, स्वस्थ व सदाचारी होते हुए भी अहंकार लेशमात्र नहीं, त्यागी, तपस्वी अव्वल दर्जे के।

स्वामीजी को योग में जो गति थी वह बेमिसाल थी पर इन सबके होते हुए भी मोक्ष की चिंता नही थी,अपितु प्राणी मात्र को मोक्ष मार्ग पर ले जाने की चिंता से ग्रस्त थे तथा यही उनका जीवन का लक्ष्य था और इसीलिए उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान वेद को पुनर्स्थापित किया और स्थापना की आर्य समाज की।

आर्य समाज की स्थापना के पीछे स्वामी जी ने अपना मन्तव्य स्पष्ट करते हुये लिखा कि मैं कोई नवीन मत या सम्प्रदाय नहीं स्थापित कर रहा हूँ वरन् सृष्टि के आदि ग्रन्थ वेद को ही पुनर्स्थापित कर रहा हूँ। इससे स्पष्ट होता है कि गुरुवर ने कोई अपना मत या सम्प्रदाय नहीं चलाया अपितु ईश्वरीय वाणी वेद को ही जानने व मानने की आवश्यकता प्रतिपादित की और इसीलिए स्वामीजी ने स्पष्ट उद्घोषणा की कि–

''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।''

आईए हम वेद के प्रचार प्रसार का संकल्प लें तथा वेद को घर–घर पंहुचाये।

डॉ. श्री गोपाल बाहेती
लक्ष्मी भवन, पृथ्वीराज मार्ग
अजमेर

****

उलझन से निकालने की कृपा करें

उत्कृष्ट शंका समाधान पृष्ट पर श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी बहुत ही अच्छे ढंग से शंका समाधान करते हैं। 31अगस्त से 6 सितम्बर 2014 वाले अंक में एक शंका उठाई गई कि मनुष्य को सौ प्रतिशत अच्छे कर्म करने के लिए संन्यास लेना आवश्यक है अथवा गृहस्थ भी कर सकता है। श्रद्धेय स्वामी जी ने इसके लिए संन्यास लेना अनिवार्य बताया है। मैं यह प्रश्न जिज्ञासुभाव से पूछ रहा हूँ कि क्या किसी प्रकार से अपने मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण रख कर मनुष्य गृहस्थ आश्रम में भी सौ प्रतिशत अच्छे कम कर सकता है? कमल भी तो कीचड़ में खिलता है। मैं आपके माध्यम से स्वामी जी से अनुरोध करता हूँ कि मुझे इस उलझन से निकालने की कृपा करे।

डॉ देशराज गुप्ता
12– मॉडल टाउल, अम्बाला

****

thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 06 का शेष

रामसेतु : राष्ट्रीय एकता...

भारतीय उपमहाद्वीप की पूरी समुद्र तटीय सीमा 7517 किलोमीटर लम्बी है। सरकार चाहती है कि वह एक ऐसी चैनल जहाजों के लिए खोदे जिससे कि पश्चिमी तट से पूर्वी तट तक जाने में विशेषकर तूती कोसिस यदि कोई चले उसे पूरे श्रीलंका की परिक्रमा अतिरिक्त सैकड़ों किलोमीटर की दूरी तयकर और कई घण्टे बिताकर तक पूर्वी तट के बन्दरगाहों में पहुंचना जरूरी होता है। यह बाधा पम्बन द्वीप और रामसेतु के उथले पानी में होने के कारण आती है। सच देखा जाए तो सबसे पहले 1860 में और फिर 1922 में सरकारी समितियों ने 9 बार इस पर रिपोर्ट दी कि वहां एक चैनल खोदी जाए जिसमें होकर जहाज आसानी से जा सके। स्वतंत्रता के बाद भी अलग अलग वर्षों में विशेषकर 1997 में पर्यावरण और वनमंत्रालय ने पहले खोदी जाने वाली नहर को पम्बन द्वीप से होकर जोड़ने की बात उठाई थी पर उसी केन्द्रीय मंत्रालय ने 2002 में वर्तमान एलाइनमेन्ट क्रमांक 6 (रामसेतु ध्वसाकर खुदाई के दौरान बनाने का सुझाव दिया। यह सारी परियोजना बनकर 2008 में पूरी होनी थी। विवादों, आसमान छूते नए बजट और भ्रष्टाचार के कारण अभी भी कोई प्रगति नहीं हुई है। तमिलनाडु की डी. एम. के सरकार सिर्फ एक बार सैंकडों करोड़ के बजट के अनुमोदन के लिए मांग का नाटक कर केन्द्र सरकार का भया दोहन करती है और राजनीति हित साधती है। पहले यह भी कहा जाता था कि कुछ इस्लामी समूह रामसेतु को ऐतिहासिक धरोहर कहने से बिदवेंगें पर उनकी तरक्की सहमति ने इस थोथे तर्क को भी झुठला दिया। सरकार के, चाहे केन्द्र स्तर पर हो या राज्य स्तर पर, सभी दावे व तर्क विफल हो चुके हैं। यह "आदम सेतु" (एडम्स ब्रिज) मुस्लिम के लिए भी उतना पवित्र माना गया है जितना हिन्दुओं के लिए, ऐसी स्थिति में मुस्लिम मुन्नेत्र कड़गम ने इस सेतु को तोड़ने वालों को पर्दे के पीछे काम कर रही विदेशी शक्तियों का एजेण्ट तक भी कह डाला। इस प्रकार यह ग्रंथ सारी दुनियां में अपनी तरह का एक अनूठा ऐतिहासिक ग्रंथ भी कहा जा रहा है।

चेन्नई में जन्में राजनीतिक विचारक सुब्रह्मण्यम् स्वामी 1990-91 के दौरान पहले केन्द्रीय वाणिज्य, विधि और न्यायमंत्री रहे और बाद में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आयोग के अध्ययन पद पर 1994-1995 के दौरान रहे। हार्वड विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट प्राप्त करने के बाद उन्होंने साइमन कुजनेट्स और पॉल सैम्युअलसन के साथ मिलकर इन्डेक्स नम्बर थ्योरी पर एक विश्वविख्यात संदर्भ ग्रंथ भी लिखा। आज के एक विख्यात बुद्धिजीवी के रूप में हार्वर्ड विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य हैं। भारत में आपात्तकाल के विरोध में भूमिगत होकर कैलाश-मानसरोवर के तीर्थ यात्रियों के लिए चीनी अनुमति के लिए उन्होंने संघर्ष भी किया था। भारत द्वारा इज़रायल को मान्यता देने, आर्थिक सुधारों व हिन्दू पुनर्जागरण व नवोत्थान के लिए उनकी प्रतिबद्धता सर्वविदित है। समीक्षित ग्रंथ अत्यन्त पठनीय भी है और संग्रहणीय भी क्योंकि वह अपने विषय का एक विश्वसनीय दस्तावेज भी है।

72 फ्रीमौन्ट कोर्ट/सामरसेट/
एन.जे. 08873 (न्यू. जर्सी - यू.एस.ए.)

डी.ए.वी. जीन्द (हरियाणा) ने चलाया स्वच्छता अभियान

डी.ए.वी. विद्यालय, जीन्द में स्वच्छता अभियान के तहत अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया। स्वच्छ भारत अभियान के तहत प्रातः कालीन प्रार्थना सभा के दौरान सभी विद्यार्थियों व शिक्षकों ने शपथ ग्रहणकर स्वच्छ भारत निर्माण का संकल्प लिया। तदुपरान्त कक्षाओं में साफ-सफाई करवाई गई। विद्यालय की एन.सी.सी.,एन.एस.एस. व स्काउट एवं गाइड की यूनिट द्वारा रैली निकाली गई, जिसमें सभी प्रकार के कूड़े-कचरे से निपटने के लिए व कूड़ादान के उपयोग के बारे में जागरुक किया गया।

नन्हे-मुन्ने बच्चों को भी हाथ धोकर स्वच्छ रहने का महत्व समझाया गया।

हिमानी द्वारा स्वच्छता विषय पर विस्तारपूर्वक व्याख्यान दिया गयाम तथा विद्यालय के जल केन्द्र व शौचालय आदि की सफाई के बारे में विशेष जानकारी दी गई।

विद्यालय में 'स्वच्छ भारत अभियान' विषय पर अंग्रेजी, हिन्दी व संस्कृत तीनों भाषाओं में निबन्ध लेखन व चित्रकला प्रतियोगिता कराई गई। जिसमें बच्चों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

स्वच्छता अभियान कार्यक्रम के अन्तिम दिन सभी विद्यार्थियों को स्वच्छता के प्रति जागरुक रहने की पुनः शपथ दिलाई गई। विद्यालय प्राचार्य माननीय हरेशपाल पांचाल जी ने सभी विद्यार्थियों व अध्यापकगण को प्रेरित करते हुए कहा कि स्वच्छता के प्रति केवल स्वयं की जागरूकता ही नहीं होनी चाहिए बल्कि अपने अभिभावकों, आसपास के सभी लोगों को जागरुक करना हमारा कर्त्तव्य बनता है।

नाभा में श्रद्धानंद बलिदान दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल नाभा के परिसर में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती मंजुला सहगल जी की अध्यक्षता में प्रातः कालीन सभा में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के छात्रों ने एक मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किया और श्रद्धानंद जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

विद्यालय के छात्रों व अध्यापकों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम संगीत विभाग द्वारा प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर आदरणीय स्वामी ब्रह्मवेश जी (छींटावाला) को आमंत्रित किया गया। विद्यालय के कुछ छात्रों ने स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला।

विद्यालय में इस अवसर पर सर्वप्रथम यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय की प्रधानाचार्या जी, **आदरणीय स्वामी ब्रह्मवेश जी**, शिक्षकों व बच्चों ने सक्रिय भाग लेते हुए यज्ञ मंत्रों का उच्चारण किया व स्वामी श्रद्धानंद जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। विद्यालय के सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों ने प्रण लिया कि वे सदा अपने माता पिता, अध्यापकों का सम्मान करेंगे। स्वामी ब्रह्मवेश जी के द्वारा बच्चों को स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं को बताया गया जिस से वे सभी कुछ न कुछ प्रेरणा लें।

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2015-17
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 07-08/1/2015
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

श्री रामनाथ सहगल आजीवन उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के संयुक्त तत्वावधान में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश में आयोजित महात्मा हंसराज दिवस समारोह के अवसर पर श्री पूनम सूरी, प्रधान, डी.ए.वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा सर्वप्रथम आर्य समाज के प्रसिद्ध समाज सेवी श्री रामनाथ सहगल को आज 90 वर्ष होने पर उनके द्वारा आर्य समाज और डी.ए.वी. को दी गई सेवाओं के लिए आजीवन उपलब्धि पुरस्कार (Life Time Achievement Award) से सम्मानित किया गया।

आर्य जगत् परिवार उनके स्वास्थ्य लाभ एवं दीर्घायु की कामना करते हैं ताकि वे इसी तरह समाज सेवा करते हुए हमारी मार्गदर्शन करते रहें।

डी.ए.वी. पटियाला में 'श्रद्धा-पर्व' मना कर दी
स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धांजलि

महान समाज सुधारक एवं क्राँतिकारी गुरुकुल शिक्षा पद्धति के जनक 'अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी' के बलिदान दिवस पर उनको श्रद्धांजलि देते डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भूपिन्द्रा रोड़, पटियाला की इकाई 'आर्य युवा समाज' द्वारा बडी ही श्रद्धा के साथ 'श्रद्धा-पर्व' मनाया गया। इस पावन अवसर पर वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ हवन किया गया; जिसमें प्राचार्य, शिक्षकवृन्द व विद्यार्थियों ने यज्ञाग्नि में आहुतियाँ प्रदान की।

'भारत-एक अनोखा राग' कार्यक्रम के अन्तर्गत स्वामी जी के बलिदानी व त्यागमयी जीवन का गुणगान किया गया जिसमें प्रो. (डॉ.) परमजीत सिंह जसवाल (वाइस चांस्लर, राजीव गाँधी नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ, पंजाब, पटियाला) मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित रहे। अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा,''स्वामी जी जैसे महान् चरित्रों के कारण ही 'आर्य समाज' एक पवित्र सामाजिक आन्दोलन के रूप में जाना जाता है। आर्य समाज के सिद्धान्तों पर आधारित डी.ए.वी. संस्था 'वैदिक संस्कृति' का अथक प्रचार-प्रसार कर रही है। बच्चों में शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का विकास कर राष्ट्रीयता की ीावना उत्पन्न करती है; जो आज के समय के लिए अति आवश्यक है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि व प्राचार्य एस.आर. प्रभाकर ने डी.ए.वी. गान के साथ 'दीप-दान' करते हुए किया। प्राचार्य प्रभाकर ने स्वामी जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा, ''धर्म बलिदानी, तपस्वी , और कर्म साधक 'स्वामी श्रद्धानन्द जी' का नाम देश धर्म और संस्कृति के रक्षक के रुप में जाना जाता है। उनका जीवन हमें दुरात्मा से महात्मा बनने की प्रेरणा देता है। उनके द्वारा स्थापित आदर्शों व जीवन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

इस अवसर पर 'स्वामी श्रद्धानन्द' लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। इस नाटिका ने बच्चों के साथ-साथ सभी दर्शकों को स्वामी जी के जीवन की भरपूर जानकारी प्रदान की। राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत अलग-अलग राज्यों का नृत्य पेश करके बच्चों ने सभी का मन मोह लिया। शिक्षिकाओं ने मिलकर भारत की गरिमापूर्ण संस्कृति 'अनेकता में एकता' को दर्शाते हुए 'भारत-एक अनोखा राग है' नृत्य प्रस्तुत कर सभी दर्शकों को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम के अन्त में मुख्य अतिथि व प्राचार्य ने कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले सभी विद्यार्थियों को स्मृति चिहन' देकर प्रोत्साहित किया। मुख्य अतिथि को 'स्मृति चिहन' व 'शॉल' भेट करके सम्मानित किया गया। उन्होंने भी इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी शिक्षकों के सहयोग की सराहना की।

राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सोल्लास सम्पन्न

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर-14, फरीदाबाद में विद्यालय के प्राचार्य श्री सुरेन्द्र सिंह चौधरी के नेतृत्व में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती का 88वाँ बलिदान दिवस विद्यालय के सभी छात्रों व शिक्षकों ने सोल्लास मनाया गया।

इस कार्यक्रम में स्वामी जी का सर्वप्रिय वेद मंत्र ''ओ३म् व्रतेन दीक्षामाप्नोति'' बच्चों ने अर्थसहित गाया तत्पश्चात् स्वामीजी पर सुन्दर सा एक भजन, उनका जीवन परिचय, उन पर एक कविता, रौल्ट का विरोध करते हुए अंग्रेजों की संगीनों के आगे छाती तानकर खड़े स्वामी जी इस घटना का नाट्य रुपान्तर की प्रस्तुति के उपरान्त स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती पर बच्चों के साथ प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया। साथ ही अपनी शुभ कामना के रूप में प्राचार्य श्री सुरेन्द्र सिंह चौधरी जी ने स्वामी जी के कार्यक्षेत्र व व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए बच्चों को ऐसे महापुरुष के चरण चिह्नों पर चलने की प्रेरणा दी तथा इस अवसर पर सभी का अपनी शुभकामना दी।

स्वच्छ विद्यालय स्वच्छ भारत अभियान

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रारम्भ किए गए स्वच्छता अभियान के कड़ी को आगे बढ़ाते हुए डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सी.डब्ल्यू.एस, जयन्त, सिंगरौली (म.प्र.) में स्वच्छ विद्यालय-स्वच्छ भारत अभियान चलाया गया। अभियान के तहत विद्यालय परिसर के अन्दर और बाहर संघन साफ-सफाई की गयी जिसमें विद्यालय के प्राचार्य अशोक कुमार मिश्र के नेतृत्व में सभी शिक्षको, शिक्षिकेतर कर्मचारियों समेत विद्यालय के छात्र. छात्राओं ने भाग लिया।

इससे पूर्व प्रातः कालीन प्रार्थना सभा में प्राचार्य श्री मिश्र ने स्वच्छता के आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व पर समस्त शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं को संबोधित किया। स्वच्छता को समर्पित इस अवसर पर स्वच्छता की शपथ भी दिलायी गयी। अभियान के दौरान शिक्षकों एवं छात्रों में काफी उत्साह देखा गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.-9868894601 सम्पादक - **पूनम सूरी**